4

मसीह, हमारा महायाजक (भाग 1)

(4:1--16)

मसीह का विश्राम (3:7—4:13)
(क्रमशः)

इब्रानियों के नाम पत्र ने चेतावनी की तेरह बातें हैं। यह इन चेतावनियों का यूनानी वाक्य रचना से जिसे अंग्रेज़ी में आम तौर पर ''आओ'' अनुवाद किया गया है स्पष्ट चिह्नित होता है (4:1, 11, 14, 16; 6:1; 10:22, 23, 24; 12:1, 28; 13:13, 15)। पहली चेतावनी ''डरने'' की है जिसे कुछ लोग नकारात्मक भावना मानते हैं; परन्तु भय ज्ञान और बुद्धि का मूल है (नीतिवचन 1:7; 9:10) जो कि बिल्कुल सकारात्मक गुण हैं। हर चेतावनी में पाठकों को जीवन की उच्च स्थिति के लिए बुलाया गया। 3:1 के साथ आरम्भ होने वाले भाग का आरम्भ 4:1–13 है जो इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भिक पाठकों को मसीह की मूसा पर श्रेष्ठता को स्वीकार कर लेने और इस प्रकार यहूदी वाद को पीछे छोड़ देने का आदेश देता है।

इस्राएल की प्रतिज्ञा मसीही लोगों के लिए खुली (4:1–13)

सब्त के विश्राम के विषय में तीन चेतावनियां (4:1–4)

[1]इसलिए जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उससे वंचित रह जाए। [2]क्योंकि हमें उन्हीं की तरह सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। [3]परन्तु हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उसने कहा,

''कि मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई,
कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न पाएंगे,''

यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे। [4]क्योंकि सावतें दिन के विषय में उसने कहीं यों कहा है, कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्राम किया।

हमारा यह हवाला, 4:1–4 पाठक को उसके सब्त के विश्राम के विषय में तीन चेतावनियां देता है। हम इसे ''हमारे सब्त के विश्राम का 'आओ' '' कह सकते हैं।

आयत 1. आयत 4 के आरम्भ **इसलिए** से यह पता चलता है कि इस अध्याय में अध्याय

3 वाला तर्क जारी रहता है। 3:12–19 वाली चेतावनियों को अध्याय 4 के विचारों के साथ समाप्त किया जाता है और वे उनसे उलझती नहीं है। **हमें डरना चाहिए** को केवल "हम गुमराह न हो" में बिगाड़ा न जाए जो उससे भी बदतर स्थिति है।

पहली आज्ञा "डरने" का आदेश है। यह पाठक को अपनी स्थिति की प्रकृति के लिए पूरा सम्मान रखने का आग्रह करती है।

"डर" इब्रानियों की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। जो व्यक्ति परमेश्वर से सही ढंग से डरता है वह विश्वासी होगा और **उसके विश्राम** को नहीं खाएगा।

आयतें 1 से 4 में "विश्राम" (*katapausis*) शब्द के कई सम्भावित अर्थ है। पहले तो यदि आयत 3 वाले वर्तमानकाल को पूरे मसीही युग के लिए लागू किया जाए तो इसका अर्थ "परमेश्वर की शान्ति" (फिलिप्पियों 4:7) जैसी अभिव्यक्ति वाला हो सकता है। अन्य शब्दों में यह वर्तमान में जो हमारे पास है उसकी बात है। एफ़. एफ़. ब्रूस ने यह कहते हुए कि 4:1–3 वाला विश्राम "आगे मिलने वाला है जिसे प्राप्त किया जाना है" जिसमें वर्तमानकाल यह संकेत दे रहा है कि "(उस) विश्राम में प्रवेश हमारे लिए है जिन्होंने विश्वास किया है" इस विचार को नकार दिया।[1] दूसरा इसका अर्थ वह विश्राम हो सकता है जो परमेश्वर ने छह दिनों की सृष्टि के बाद किया था। तीसरा, इसका इस्तेमाल इस्राएल के लिए प्रतिज्ञा किए हुए देश के लिए है। आयत 3 में हम "मेरे विश्राम" के बारे में पढ़ते हैं जो भजन संहिता 95:11 से लिया गया वाक्यांश है। यहां "मेरे विश्राम" उस विश्राम की ओर भी संकेत है जो सृष्टि का काम पूरा जाने के बाद परमेश्वर ने किया था (उत्पत्ति 2:2) और प्रतिज्ञा किए हुए देश का विश्राम। चौथा इस शब्द के इन उपयोगों से बढ़कर एक विश्राम है जो **अब तक है**।[2] अब तक रह गया विश्राम मसीही युग के धर्मी विश्वासियों के लिए है।

कुछ रब्बियों का मनना था कि उत्पत्ति में सातवें दिन के लिए शाम का कोई उल्लेख नहीं था इस कारण परमेश्वर के विश्राम का दिन अब तक जारी रहता है।[3] अन्यों का मानना था कि परमेश्वर हर सब्त के दिन विश्राम करता था।[4] इस प्रकार "विश्राम के दिन" का कोई अन्त नहीं था। इब्रानियों के लेखक की चिंता चौथे "विश्राम" की अवधारणा यानी स्वर्ग के अनन्त विश्राम की बात की। पत्री में मुख्यतया इसी "विश्राम" पर ज़ोर दिया गया है।

आयत 1 में "उसके विश्राम" उस प्रतिफल को कहा गया है जो परमेश्वर ने संतों के लिए तैयार किया है, यानी स्वर्ग के विश्राम को। इसके अलावा मसीही लोग वास्तव में परमेश्वर के विश्राम में अब प्रवेश कर सकते हैं। "यह केवल परमेश्वर द्वारा दिया गया विश्राम नहीं है; यह परमेश्वर का अपना विश्राम है जिसे वह छुड़ाए हुए लोगों के साथ साझा करेगा।"[5] (मत्ती 11:28–30) हमें अब विश्राम का आश्वासन मिला है जिसे "परमेश्वर की शांति" (फिलिप्पियों 4:7), और अनन्तकाल तक (प्रकाशितवाक्य 14:13) कहा जा सकता है। पुराने समय में इस्राएलियों ने जिस विश्राम में प्रवेश किया था वह परमेश्वर के अनन्त विश्राम का केवल एक रूप था।

मिस्र से निकलने वाले अधिकतर इस्राएलियों के साथ जो कुछ हुआ यानी प्रतिज्ञा किए हुए विश्राम में उनका प्रवेश न कर पाने को ध्यान में रखते हुए हमें डरना चाहिए। इन चेतावनियों के कोई भी वास्तविक अर्थ होने के लिए हमें परमेश्वर के अनुग्रह से गिरने और उसे खोने की

सम्भावना को मानना होगा। इस्राएल की एक पीढ़ी कनान में प्रवेश नहीं कर पाई। यदि मसीही लोगों को परमेश्वर के अनन्त "विश्राम" को खोने का कोई वास्तविक खतरा न होता तो परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक की ओर से हमें चेतावनी देने की यह बात लिखने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी।

हर मसीही को यह तय करने के लिए कि क्या उसका मुख्य लक्ष्य परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करना है अपने आपको जांचते रहना चाहिए (2 कुरिन्थियों 13:5)। अतीत से सीखना, विशेषकर अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों को, सबसे अधिक सहायक है।[6] परमेश्वर के साथ इस्राएल के सम्बन्ध अर्थात भरोसा करने वाले विश्वास की कमी के कारण इतने पक्के तौर पर यह साबित कर दिया कि वे गिरे और नष्ट हो गए। इस तथ्य का हमारे लिए यह अर्थ होना चाहिए कि हम भी वैसा ही कर सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:1-13 में पौलुस के कहने का ऐसा ही अर्थ था। हमें चिंता और निश्चय के साथ उसके निष्कर्ष को मान लेना चाहिए: "इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े" (आयत 12)। यदि उसकी भाषा को तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचाना है तो जंगल में शारीरिक तौर पर जो कुछ इस्राएलियों के साथ हुआ वह आत्मिक रूप में हमारे साथ हो सकता है। अन्य शब्दों में हम स्वर्ग पर अपनी पकड़ को खो सकते हैं जब हमारा विश्वास डगमगाता है।

मिस्र से निकलकर अब्राहम की संतान सीधे प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं गई। उन्हें एक के बाद एक कई परीक्षाओं के लिए जंगल में ले जाया गया और वे उनमें से अधिकतर परीक्षाओं में नाकाम रहे। इसी प्रकार से हम तुरन्त अपने स्वर्गीय विश्राम में नहीं जाते हैं। इस जीवन में हमें जंगल जैसे एक सामाजिक संसार में से निकलने को विवश किया जाता है जिसमें बहुत से लोग मसीह से खो जाते हैं।

यदि यह इब्रानी लोग मसीह के जाने के केवल पैंतीस वर्षों में ही थक चुके थे तो यह स्पष्ट है कि दो हज़ार वर्षों के बाद मसीही लोग उस विश्राम को खोजने में कितने थक सकते हैं। कोई हिम्मत हार सकता है, कोई ठण्डा पड़ सकता है और परमेश्वर की अनन्त प्रतिज्ञाओं को खो सकता है। लौदीकिया के लोग गुनगुने हो गए थे और उद्धारकर्त्ता द्वारा उन्हें "मुंह में से उगल" दिया जाने वाला था (प्रकाशितवाक्य 3:14-16)। हमें याद रखना चाहिए कि अब्राहम और पुराने नियम के और विश्वास सेवकों को पूरी तरह से पता नहीं था कि प्रतिज्ञाओं के पूरा होने में उन्हें क्या दिया जाएगा। तौभी "उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए" (इब्रानियों 11:13), वे विश्वास में बने रहे।

पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं में से किसी के लिए भी **ऐसा न हो कि कोई जन उससे वंचित रह जाए** कुछ लोगों को वंचित होने की सम्भावना का संदेह दिलाता है। यदि ऐसा होता, तो चेतावनी की कोई आवश्यकता होनी ही नहीं थी। NIV में है "सावधान रहो कि तुम में से कोई इससे वंचित हुआ न पाया जाए।" इस वचन का सही विचार यह है कि "किसी निर्णय की जानकारी डरने के लिए पेश न होने से बड़ा कारण है।"[7] "इसलिए" जिससे अध्याय 4 का आरम्भ होता है यह दिखाता है कि इस अध्याय में अध्याय 3 वाला तर्क जारी रहता है। 3:12-19 की चेतावनियां अध्याय 4 के विचारों के साथ बन्द हो जाती हैं और उनके उलट नहीं हैं। आयत 1 के "हमें डरना चाहिए" को केवल "हम गुमराह न हों" में न बिगाड़ा जाए स्थिति उससे कहीं बदतर है।

परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होकर यह जानना कि परमेश्वर के विश्राम को पाने के अपने अवसर को हमने खो दिया कितना भयंकर है! निश्चिंत रहें हम सब "मसीह के न्याय आसन" के सामने खड़े होंगे (2 कुरिन्थियों 5:10)।

आयत 2. *दूसरी आज्ञा उस वचन को जो हमें दिया गया है सुनने और उसके अनुसार जीने की है।* हमें एक संदेश सुनाया गया है और हमें यह सुनिश्चित करना है कि हम ने इसे पा लिया है और हम इसकी बात मानते हैं।

लेखक ने कहा **हमें सुसमाचार सुनाया गया है।** KJV में है "हमें शुभ समाचार दिया गया है।" "सुसमाचार" के लिए अंग्रेज़ी शब्द "gospel" पुराने एंगलो-सेक्सन शब्द "God's spel" या "God's Word" से लिया गया है। मूल शब्द *euangelizō* से लिया गया है जिसका अर्थ है "शुभ समाचार" या "अच्छी बातों" का प्रचार करना। मनुष्य के लिए परमेश्वर के प्रकाशन के लिए नये नियम का यह एक पसन्दीदा शब्द है। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि "सुसमाचार" पुराने नियम के समयों के लोगों को सुनाया गया था, चाहे उनके "शुभ समाचार" में केवल सांसारिक विश्राम की बात की। नये नियम का "सुसमाचार" जहां चाहे बिल्कुल अलग किसम का है, परन्तु दोनों के लिए उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल एक ही वाचा है जो पुराने नियम से नये नियम में जारी रहती है।

इस वाक्यांश का मूल अनुवाद है "जैसे उन्हें सुनाया गया वैसे ही हमें सुसमाचार सुनाया जाता है।" 1 कुरिन्थियों 10:3, 4 में ऐसी ही एक अवधारणा मिलती है, जो कहती है, "और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया। और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उन के साथ-साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।" निश्चय ही कुछ मूल बातें वहीं हैं, विशेषकर इस्त्राएलियों और मसीही लोगों के लिए उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता को मसझने और केवल उसकी पर निर्भर रहने की आवश्यकता। एक को दी गई पेशकश अस्थाई देश था। परन्तु दसरे को दी गई पेशकश अनन्त जीवन है।

"सुसमाचार सुनाया" जाने का विचार इस बात का सुझाव देता है कि किसी नगर या इलाके में प्रचार किए गए संदेश को सुना है, चाहे इससे बदले केवल कुछ ही लोग थे। एक इलाके के लिए सुसमाचार सुनाया गया होने के योग्य होने के लिए बदलने वालों के लिए एक निश्चित प्रतिशत होना आवश्यक नहीं है। इसके बजाय सुसमाचार लोगों के लिए उपलब्ध होना आवश्यक है।[8]

इस्त्राएलियों ने बड़े पैमाने पर संदेश को ठुकरा दिया था इस कारण **उन्हें कुछ लाभ न हुआ।** लेखक द्वारा इस निष्कर्ष को ठहराए जाने का कारण यह है कि **सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठता।**[9] सुनने वालों ने सुने गए संदेश को विश्वास के साथ नहीं मिलाया, जो कि उनकी जिम्मेदारी थी। यह आयत इस विचार को निकाल देती है कि हमारा विश्वास परमेश्वर की ओर से मिला दान है न कि हमारे अपने मानसिक प्रयास का प्रणाम।

गिनती 14:26-34 उस विद्रोह की कहानी बताता है जब लोगों ने यहोशू और कालेब को पथराव करने की धमकियां दी थी क्योंकि इन दो जासूसों ने अपने निर्णय को विश्वास पर आधारित बनाया था। तो फिर परमेश्वर ने बीस की उम्र से कम हर व्यक्ति को छोड़ देने की प्रतिज्ञा क्यों की? क्या उसने केवल उन्हें कालेब और यहोशू के साथ प्रवेश करने की अनुमति

इसलिए दी क्योंकि उसने बूढ़े लोगों के बजाय जवान पीढ़ी में अधिक विश्वास या विश्वास की सम्भावना को देखा था? विश्वास के साथ सही ढंग से मिलाए जाने से पहले परमेश्वर के वचन को सुनना और उस पर इतना विश्वास करना आवश्यक है कि इस पर काम किया जाए। इस वचन से हम देखते हैं कि हर किसी के उद्धार की शिक्षा बाइबल की नहीं है। आज बहुत से लोग सुसमाचार को सुनते और कलीसिया की आराधना सभाओं में जाते हैं, परन्तु वे कभी सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते इस कारण उन्हें इससे कोई लाभ नहीं होता। किसी के लिए जिसके सामने शानदार भोजन पड़ा हो उसे न खाकर भूख से मर जाना कितने दुख की बात होगी! सचमुच में सुसमाचार के संदेशों पर दावत के अवसरों को पाने के बावजूद किसी के आत्मा को कूड़ा करकट लिखाना सचमुच में दुखद बात है। सुने गए सुसमाचार में विश्वास दिलाने वाली सामर्थ है; और जब इस पर अमल होता है तो यह उद्धार दिलाता है (रोमियों 10:17; 6:17, 18)।

आयत 3. *तीसरी आज्ञा विश्वास में बंधे रहने की है।* मसीही चलन की प्रेरणा हमारे प्रभु और हमें दिए उसके संदेश में सच्चे दिल से विश्वास में बढ़ना है।

आयत 1 हमारे लिए प्रतिज्ञा किए गए विश्राम यानी परमेश्वर के विश्राम की बात करती है। आयत 2 में उस विश्राम के शुभ समाचार को जंगल में इस्राएलियों को औरह में सुनाए जाने की बात कही गई है। परमेश्वर अवश्य उन्हें अपने विश्राम में प्रवेश कराकर आनन्द देना चाहता होगा, नहीं तो उसने इसे तैयार न किया होता या लोगों को इसमें प्रवेश करने को न कहा होता। आयत 3 एक घोषणा है कि सभी विश्वासी, यदि वफ़ादार हों तो वास्तव में **विश्राम में प्रवेश करते हैं। विश्वास किया है** भूतकाल है; परन्तु प्रवेश ''वर्तमान काल'' है जो इस बात का सुझाव देता है कि ''जिस विश्राम की बात वह सोच रहा है यह वह अनुभव है जो पहले से पूरा होने की प्रक्रिया में है।''[10]

''हम जिन्होंने विश्वास किया है'' वर्तमान काल के बजाय भूतकाल है और इसे पत्र के पाठकों के बीच बातचीत माना जाना चाहिए।[11]

यह हवाला विशेष तौर पर उन लोगों विवरण है जो मसीह में परिवर्तित हुए थे। प्रेरितों 2 अध्याय यीशु के स्वर्गारोहण के बाद पहले परिवर्तितों के उन्हें पतरस द्वारा सुनाए हुए वचन को ''ग्रहण'' करने की बात बताता है। फिर उन्हें बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 2:38-41)। फिलिप्पी दारोगा और उसे परिवार को यीशु में विश्वास करने को कहा गया था (प्रेरितों 16:31); प्रभु का वचन दिए जाने के बाद उन्होंने तुरन्त बपतिस्म लिया था (प्रेरितों 16:33)। उनके मन परिवर्तन का वर्णन अन्त में ''परमेश्वर पर विश्वास करके'' वाक्यांश के साथ किया गया (प्रेरितों 16:34)। इसलिए मन परिवर्तन को वह बिन्दु कहना सही है जब व्यक्ति ने ''विश्वास किया'' और उसमें शामिल करने के लिए बिना विस्तार से यह कहते हुए, मसीह में बपतिस्मे का कार्य किया। रोमियों 13:11 में पौलुस ने सम्पूर्ण उद्धार का समय ''जिस समय हमने विश्वास किया था उस समय के विचार से निकट'' बताया। उसके पाठकों का उद्धार निकट हो गया जब उन्होंने वैसे ही बपतिस्मा लिया जिसका संकेत रोमियों 6:3-5 में पौलुस ने दिया। जब उन्होंने ''मसीह में बपतिस्मा लिया।'' एक बार फिर यह स्पष्ट है कि विश्वास करने के कार्य में बपतिस्मे में आज्ञापालन शामिल है, जो कि विश्वास का एक कार्य है जिसके द्वारा व्यक्ति मसीह में आता है, जिसमें उद्धार पाया जाता है।

अगले वाक्यांश के लिए KJV में है "यदि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करें।" यह यूनानी का मूल अर्थ है, चाहे इसका कोई मुहावरेदार अर्थ नहीं है। परम्परागत रूप में यह यह कहने का ढंग था कि कोई काम नहीं किया जाएगा। दाऊद ने इस ढंग का इस्तेमाल किया जब उसने कहा, "*यदि* मैं सूर्य के अस्त होने से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु खाऊं, तो परमेश्वर मुझ से ऐसा ही, वरन इस सेभ्भी अधिक करे" (2 शमूएल 3:35)। वह पक्की शपथ के साथ यह घोषणा कर रहा था कि वह सूर्य ढलने तक कुछ नहीं खाएगा। इसलिए बेहतर अनुवाद NASB और हिन्दी वाला है: **"वे मेरे विश्वास में प्रवेश करने न पाएंगे।"**[12] लेखक भजन संहिता 95:11 से उद्धृत करता है, जो कहता है कि प्रभु ने अपने क्रोध में शपथ खाई कि जिन्होंने कादेश बर्ने में विद्रोह किया था वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे। यहूदियों के लिए "विश्राम" (कनान) वफ़ादारों के लिए स्वर्ग का रूप है; परन्तु हमें भी प्रवेश करने से रोका जाएगा यदि हम अपने सफ़र के अन्त तक वफ़ादार नहीं रहते। परमेश्वर के "शपथ खाने" का समय उन दिनों के लिए है न कि अन्तिम न्याय के समय के लिए। वैसे ही हम भी न्याय के लिए मसीह की वापसी से बहुत पहले अपनी अनन्त मीरास को खो सकते हैं।[13]

लेखक ने आगे कहा, **यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय उसके काम पूरे हो चुके थे।** परमेश्वर ने सृष्टि के अपने काम के पूरा हो जाने पर विश्राम किया और तब से वह सृष्टि के काम से विश्राम ही कर रहा है। अनुवादित शब्द "उत्पत्ति" "सृष्टि" के लिए विशेष शब्द *ktisis* के बजाय *katabolē* है। "जगत की उत्पत्ति" (*katabolēs kosmou*) की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल नये नियम में सृष्टि के लिए होता रहता है।[14]

आयत 4. फिर लेखक ने उत्पत्ति 2:2 से उद्धृत किया: **परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटाकर विश्राम किया।** इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर थक गया था और उसे विश्राम की आवश्यकता थी। उसका विश्राम पूर्ण विश्राम नहीं था किंतु यीशु ने कहा कि उसका पिता अभी भी काम कर रहा है (यूहन्ना 5:17)। परमेश्वर अभी भी संसार की निगरानी करता है और उपाय के काम करता है, चाहे आशिषें देने के लिए स्वर्गदूतों के द्वारा ही हो (देखें रोमियों 8:28)। इसलिए सब्त में पूरी तरह से निठल्ले होने की बात नहीं होगी बल्कि "छह दिनों" से पहले के सभी साधारण कार्यों को बन्द करना होगा।[15] सब्त के दिन चंगाई देने में यीशु का काम दया में किया गया परमेश्वर का ही काम था (यूहन्ना 5:16, 17)। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि करने के बाद रचना का काम बन्द कर दिया जैसे कह रहा हो, "मनुष्य मेरी सबसे बड़ी प्राप्ति है इस लम्बी प्रक्रिया का लक्ष्य मेरे स्वरूप वाला, मेरे साथ सहभागिता करने के योग्य एक स्वतन्त्र आत्मा का आना है।"[16]

"सब्त के दिन का विश्राम" यहूदियों को मिस्र से उनके छुड़ाने जाने की यादगार के रूप में दिया गया था (व्यवस्थाविवरण 5:15)। विश्राम करने की आज्ञा उन्हें सातवें दिन परमेश्वर के विश्राम करने को भी याद दिलाती थी। परन्तु सब्त को मानने का दावा करने वालों के दावे कि विश्राम का नियम नैतिक नियम है और इस कारण सदा तक रहेगा पवित्र शास्त्र के आधार पर नहीं है। व्यवस्थाविवरण 5:14, 15 की आयतें साफ़ कहती हैं कि सब्त का साप्ताहिक मनाया जाना इस्राएलियों को मिस्र की दासता से उनके छुड़ाने को याद रखने का एक प्राथमिक कार्य था। इसके अलावा नहेमायाह 9:13, 14 संकेत देता है कि सीनै पहाड़ पर परमेश्वर ने "उन्हें अपने

पवित्र विश्राम दिन का ज्ञान दिया।" यदि उस ने उन्हें सीनै पहाड़ पर बताया था तो यह अदन के समय से प्रभावी नैतिक नियम नहीं होगा।

क्योंकि उसने कहीं यों कहा है अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं है कि लेखक को मालूम नहीं था कि यह कहां लिखा है बल्कि यह आम लोगों को पता बात थी, जिसका अर्थ "जैसा कि हम जानते हैं" या "परिचित शब्दों को उद्धृत करने के लिए" जैसा कुछ है।[17]

हम हर प्रयास करें कि अपने विश्राम को न खो दें। हमें डरना चाहिए, हमें वचन को ग्रहण करके इससे लाभ लेना चाहिए और विश्वास करते रहना चाहिए। यदि हम इन तीन चेतावनियों की ओर ध्यान देते हैं तो हमें परमेश्वर की शांति अब और उसका विश्राम यानी उसकी अनन्त शांति अनन्तकाल तक मिलेगी।

सब्त का विश्राम बाकी है (4:5-11)

5और इस जगह फिर यह कहता है, "वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएंगे।" 6तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और जिन्हें उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया। 7इसलिए वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है, जैसे पहिले कहा गया,

"यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
तो अपने मनों को कठोर न करो।"

8क्योंकि यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। 9अतः जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है। 10क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर की नाईं अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है। 11अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें ऐसा न हो, कि कोई जन उनकी नाईं आज्ञा न मानकर गिर पड़े।

आयतें 5, 6. प्रतिज्ञा किए हुए विश्राम में प्रवेश न कर पाने के दोषी इस्राएली किसी दूसरे को दोषी नहीं ठहरा सकते थे बल्कि वे स्वयं ही दोषी थे क्योंकि उनके अपने आज्ञा न मानने के कारण वे इस विश्राम को नहीं पा सके थे। इब्रानियों 3:4 में मिलने वाली भजन संहिता 95:11 की चेतावनी को ज़ोर देने के लिए 4:5, 6 में दोहराया गया है। यहां यह नहीं कहा गया कि युवा पीढ़ी ने कनान में प्रवेश किया क्योंकि लेखक इस बात पर ज़ोर नहीं देना चाहता था।

हम देखेंगे कि भजन संहिता 95 वाला **विश्राम** यहोशू की अगुआई में पाए गए प्रतिज्ञा किए हुए देश की बात नहीं है, क्योंकि इस्राएल के लोग भजनकार के यह लिखने से कि **कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें** बहुत पहले कनान में प्रवेश कर चुके थे। परमेश्वर कभी किसी बात की प्रतिज्ञा व्यर्थ में नहीं करता; इसलिए कुछ लोगों ने कनान में प्रवेश करना था और कुछ का स्वर्ग में प्रवेश करना "अवश्य है" (KJV)।[18] परमेश्वर के वचन को तोड़ा नहीं जा सकता

(यूहन्ना 10:35) परमेश्वर कभी हारता नहीं है और उसका वचन कभी पूरा हुए बिना टलता नहीं है; हमारे सीमित दृष्टिकोण से कभी कभी ऐसा लगता है।

आज्ञा न मानना, मसीही बन जाने के बाद भी, स्वर्ग में प्रवेश करने के लक्ष्य को मात दे सकता है, परन्तु उसके वफ़ादार रहने वालों के लिए परमेश्वर की मंशा को कभी खत्म नहीं करेगा।[19] उसे कभी सम्पूर्ण हानि की चिंता नहीं होती क्योंकि वह आरम्भ से ही अन्त को जानता है और उसे मालूम है कि अन्तिम विजय उसी की है। जो लोग उसके हैं वे उस विजय में साझीदार होंगे (प्रकाशितवाक्य 17:14)।

परमेश्वर सारे इतिहास को खत्म करने के लिए जब उसे सही लगे समय में काम कर रहा है। इब्रानियों की पुस्तक दिखाती है कि विश्वासयोग्य लोग स्वर्गीय विश्राम की राह इस सीमित संसार से कहीं आगे देखते हैं (11:13–16; 13:14)। हमारी सोच की घातक कभी यह मान लेना है कि हम उतना जानते हैं जितना वास्तव में हम जानते हैं। हम भविष्य को नहीं देख सकते इस कारण हमारा ज्ञान सीमित है।

आयत 7. इकट्ठे बोलते हुए ईश्वरीय और मानवीय दोनों को मिलाया गया है। दिन को **ठहराते हुए वह** परमेश्वर के लिए ही है, परन्तु यह **दाऊद की पुस्तक में** था। ये दाऊद के शब्द थे, परन्तु "परमेश्वर का आत्मा है जो उनके द्वारा बात करता है।"[20] यह एक बार फिर से दाऊद के ईश्वरीय प्रेरणा पाए होने की पुष्टि करता है।

आयत 8. इस आयत का आरम्भ होता है, **क्योंकि यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता।** KJV में "यहोशू" के स्थान पर "यीशु" है। पुराने नियम के इब्रानी धर्मशास्त्र में "यहोशू" ना है जो कि यूनानी के "यीशु" के समान है। यह नाम जिसका अर्थ "प्रभु उद्धार करता है" दोनों के लिए हो सकता है। यह जानते हुए 1611 के विद्वानों ने मूल यूनानी शब्द ("यीशु") के इस्तेमाल को प्राथमिकता दी क्योंकि उन्हें यह हस्तलिपियों में मिल गया था। उलझन से बचने के लिए यदि सारे नहीं तो अधिकतर आधुनिक अनुवादों ने इसका अनुवाद "यहोशू" हुआ है।[21] मूल धर्मशास्त्र के पाठकों के लिए वचन में रूप और प्रतिरूप के संकेतों की तुरन्त समझ होगी। जिसमें यहोशू पुराने नियम वाला यहोशू नये नियम वाले "यहोशू" (यीशु) का रूप है। इसके बावजूद पुराने नियम का "यहोशू," "यीशु" उस विश्राम को नहीं दिला सका जिसे नये नियम का यीशु अर्थात "यहोशू" दिलाता है। इब्रानियों में तथा पवित्र शास्त्र में कहीं और इस शब्द का खेल आधुनिक पाठक को नाम की पहचान से बहुत बढ़कर आगे न लिया जाए।

यहोशू 22:4 कहता है कि परमेश्वर ने वह विश्राम दे दिया था जिसकी प्रतिज्ञा उसने इस्राएल से की थी। कई प्राचीन यहूदी यह तर्क दे सकते हैं कि कनान में उनके पूर्वजों की अगुआई करके यहोशू ने विश्राम की प्रतिज्ञा को पूरा किया था। परन्तु यहोशू के समय के चार सौ साल बाद दाऊद ने कहा कि एक और विश्राम अभी मिला नहीं था। भजन संहिता 95:7–11 में दाऊद के समय के लोगों को अविश्वास के प्रति चेतावनी दी और इब्रानियों के लेखक ने अपने समय के लोगों के लिए इस वचन में से उद्धरण को लागू करना चुना। उसका उपयोग यह सुझाव देता है कि यह चेतावनी आधुनिक समय में ही उतनी ही प्रासंगिक है। इसलिए आयतें 8 और 9 स्पष्ट रूप में **दूसरे दिन** और दूसरे विश्राम की बात करते हैं।

आयत 9. विश्राम का आश्वासन केवल **परमेश्वर के लोगों के लिए** था। पुराने नियम की यह अभिव्यक्ति केवल यहूदियों के लिए थी, परन्तु नये नियम में यह सब मसीही लोगों पर लागू होती है।

आयत 9 में **सब्त का विश्राम** वाक्यांश *sabbatismos* है जो नये नियम में केवल यहीं मिलता है। वास्तव में यूनानी लेखों में इससे पहले यह कहीं नहीं मिलता।[22] *Sabbatismos* का इस्तेमाल चाहे केवल यहीं है पर *sabbatizein* इसका सजातीय क्रिया आम तौर पर LXX में मिलता है। इस विचार को कि यह शब्द इब्रानियों के लिए अलग किया गया था निकाला जा सकता है क्योंकि यही शब्द काफ़िर लेखक पलुटार्क द्वारा इस्तेमाल किया गया था (लगभग ईस्वी 46–120)।[23] यह शब्द हमें बताता है कि परमेश्वर ने "इस पाप भरे और थकाने वाले जीवन के हर परिश्रम और बीमारी से" राहत देने के लिए एक आदर्श विश्राम की तैयारी है।[24]

इस जीवन में हम चाहे आधिकारिक विश्राम को नहीं मनाते हैं पर अनन्तकाल में हमें यह अवश्य मिलेगा। वह ऐसा विश्राम होगा जैसा परमेश्वर चाहता है, बिना पाप के आदर्श स्थिति वाला विश्राम। हमें मत्ती 11:28–30 में मसीह की पहले ही की गई प्रतिज्ञा में इसका पूर्व स्वाद दिया गया है। परमेश्वर ने केवल सृष्टि के काम से विश्राम किया, इस कारण यह मान लेना तर्कसंगत लगता है कि हम ऐसी गतिविधियों में व्यस्त होकर अनन्तकाल को बताएंगे जिन से अभी हम परिचित नहीं हैं। इसी प्रकार हमें उस "विश्राम" से आगे जो मसीही लोगों को यहां पर इस जीवन के परिश्रमों और मुश्किलों से मिलता है, स्वर्ग में "विश्राम" मिलेगा। केवल राज्य के लोगों को ही यह आशीष है (कुलुस्सियों 1:13, 14)।

आयत 10. इस आयत का आरम्भ होता है, **क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है।** KJV का अनुवाद कुछ उलझाने वाला है: "क्योंकि वह जो उसके विश्राम में गया है।" "वह" प्रभु यीशु नहीं है बल्कि जैसा कि "जो" NASB संकेत देता है कि इसका अर्थ विदा हुआ हर संत है जो उसके प्रवेश में प्रवेश कर चुका है (प्रकाशितवाक्य 14:13)। मसीह ने काम करना बन्द नहीं किया है जैसा उसने कब्र में रहने के समय किया था (देखें यूहन्ना 9:4),[25] बल्कि वह सिंहासन के सामने हमारे लिए विनती करने का काम करता रहता है (इब्रानियों 7:25)। "पूरा हुआ!" की उसकी पुकार (यूहन्ना 19:30) उसके पृथ्वी पर के काम के लिए थी न कि उसके स्वर्गीय प्रयासों के लिए। इसी प्रकार से जो मसीह में मरे हैं निश्चय ही उनकी हर गतिविधि बन्द नहीं हुई है। प्रकाशितवाक्य मरे हुए धर्मियों को परमेश्वर की महिमा गाते हुए दिखाता है। प्रकाशितवाक्य 5:8, 9 में चार जीवित प्राणी और चौबीस प्राचीन गाते हैं; 14:3 में 1,44,000 को गाते हुए दिखाया गया है; और 15:2, 3 में पशु पर और उसकी मूर्ति पर "जयवंत" होने वालों को मूसा का और मेमने का गीत गाते हुए दिखाया गया है।

स्वर्ग में "सोई हुई आत्मा" की निष्क्रियता कोई प्रमाण नहीं है। मृत्यु के समय "लाज़र को" अब्राहम की गोद "में" (*eis*) ले जाते हुए दिखाया गया है (लूका 16:22)। वहां वह क्या करता था यह नहीं बताया गया है। परन्तु इसका कोई अर्थ नहीं है कि अब्राहम के सामने, जो बोलता है कि लाज़र कुछ नहीं करते हुए पूरी तरह से सोया होगा। यीशु ने घोषणा की कि पश्चात्तापी डाकू ने उसी दिन स्वर्गलोक में होना था (लूका 23:43)। यदि उस इलाके में जहां आशीष होने की बात है कोई गतिविधि नहीं है तो लगता नहीं है कि यह सफ़र किसी काम है।

इसके बावजूद यह और अन्य आयतें जीवन की चिंताओं और संघर्षों से मुक्ति का सुझाव देती हैं। आल्बर्ट बारनस ने सुझाव दिया है, "हमारे परिश्रम खत्म हो जाएंगे।" थका हुआ मनुष्य अपने बोझ को उतार देगा; थके हुए ढांचे को फिर थकान का पता नहीं होगा।[26] निश्चय ही अनन्त सब्त परमेश्वर की महिमा में सेवा का समय होगा परन्तु यह विश्राम के लिए तड़पते लोगों को संतुष्ट भी करेगा।

आयत 11. परमेश्वर के **विश्राम** के अन्तिम उल्लेख के साथ यह आयत एक अन्तिम चेतावनी देती है। स्वर्ग में **प्रवेश** करने के लिए प्रयास किया जाना आवश्यक है, क्योंकि बिना लगन के इसमें प्रवेश नहीं किया जा सकता। ज़ोरदार आग्रह करने वाले शब्द का अनुवाद **प्रयत्न करें** (*spoudazō* से) है जिसका अर्थ "सच्चे मन से कोशिश करना, अपना ध्यान लगाना, जल्दी करना, ज़ोर लगाना, हर कोशिश करनी, और उत्साही होना।"[27] 2 पतरस 1:10 में इसी शब्द का अनुवाद "यत्न करते जाओ" हुआ है। सकरे मार्ग में से जाने के लिए सचमुच में प्रयास लगाना पड़ता है; परन्तु उद्धार के मार्ग में प्रवेश करने के सम्बन्ध में लूका 13:24 में प्रयुक्त शब्द *agōnizomai* है जो प्रवेश करने के लिए उत्साह से कोशिश करने या संघर्ष करने का सुझाव देता है। लूका में यह शब्द इब्रानियों 4:11 वाले "प्रयत्न करें" शब्द से अलग प्रयास लगाने की मांग करता प्रतीत होता है। इब्रानियों के लिए सकरे मार्ग में बने रहने की अपेक्षा अन्यजातियों के लिए इसमें प्रवेश करना अधिक कठिन था? इस विचार का संकेत हो सकता है, परन्तु कम से कम हम "आसानी के फूलों की सेज पर आकाश में ले जाए जाने" की उम्मीद नहीं कर सकते। इसके बजाय "यदि हमें [राज] करना है तो [हमें] लड़ना होगा।"[28] स्वर्ग में कोई आसान से फिलसलकर नहीं चला जाएगा।[29] हम कोशिश करते हैं क्योंकि अनन्त छुटकारे का ईनाम इतना महिमामय है, और इसे खोना इतना बड़ा और भयानक है।

"प्रयत्न करने" का आग्रह किए जाने के बावजूद बहुत से टीकाकार इस विचार में जोड़ देते हैं: "परन्तु हमें यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि इसे कामों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।"[30] स्पष्टतया कुछ लोग इसे मान लेते हैं कि कोई भी आज्ञापालन या मानवीय प्रयास, चाहे विश्वास से किया गया हो, उसमें यह चेतावनी जोड़ी जानी चाहिए। "यह मत सोचे की इससे तुम्हें स्वर्ग में जाने में सहायता मिलती है!" उनका विचार यह है कि यदि हमें लगता है कि हमारे संघर्ष पर कोई चीज़ निर्भर है तो वह हमारे उद्धार को कामों का प्रबन्ध बना देती है। यह कैल्विनवादी शिक्षा का परिणाम है। जिन वचनों में आम तौर पर सब "कामों" को उद्धार प्राप्त करने के लिए अनावश्यक बताया जाता है उनमें इफिसियों 2:8, 9 और रोमियों 3:27—4:8 शामिल हैं।

किसी को यह कैसे पता चल सकता है कि हमें अपने वफ़ादार बने रहने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है और फिर यह इनकार करना की उद्धार के लिए किसी काम की कोई आवश्यकता नहीं है? रोमियों 3:28 में निकाले गए काम "व्यवस्था के काम" यानी मूसा की व्यवस्था के काम हैं। इफिसियों 2:8, 9 में निकाले गए "काम" निश्चय ही खूबियों के काम हैं, परन्तु यह विश्वास से किए गए आज्ञापालन की आवश्यकता को नहीं निकाल सकता। उद्धार हमारे लिए एक दान है, "न कि कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:9)। विश्वास या मन फिराव के अपने कामों पर किसने कभी घमण्ड किया है? शायद कुछ

लोग कर सकते हैं परन्तु ऐसा करके वे धर्मी नहीं ठहराए जा सकते क्योंकि यदि मसीह ने उद्धार दिलाने के लिए अपने लहू के द्वारा अवसर न दिया होता तो किसी काम से उद्धार नहीं हो सकता था। यीशु ने बताया कि विश्वास स्वयं ''काम'' है (देखें यूहन्ना 6:28, 29), पर यह उद्धार प्राप्त करने के लिए गुण का काम नहीं है।

रोमियों 13:11 घोषणा करता है, ''और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।'' ''जिस समय [इन मसीही लोगों ने] विश्वास किया था'' अवश्य ही उनके मनपरिवर्तन के समय को कहा गया। उनके ''विश्वास'' में उस समय ''मसीह में'' उनका बपतिस्मा शामिल था, जैसा कि पौलुस ने पहले ही उन्हें याद दिलाया है (रोमियों 6:3, 4)। उस कार्य ने उनके मन परिवर्तन को प्रेरितों 2 के बाद के अन्य सभी मन परिवर्तनों से मिला दिया।

हमारे उद्धार के लिए आवश्यक होने से निकाले गए काम धर्मी ठहराए जाने के किसी भी प्रबन्ध के गुणों से भरे काम हैं, क्योंकि उनकी आवश्यकता व्यवस्था पूरी तरह से मानने के लिए होनी थी। यदि कोई सिद्ध होकर रह सकता तो उसके काम उसके उद्धार को ''कमा'' सकते थे। परन्तु यीशु को छोड़ अभी तक किसी का जीवन ऐसा नहीं रहा है। हमारे लिए ऐसा उद्धार असम्भव है। दूसरी ओर आज्ञापालन में विश्वास के काम अभी भी आवश्यक हैं। मसीह के हमारे बाहर रहने के समय किए गए पापों के दोष से आरम्भिक छुटकारा पाने और अपने उद्धार में बने रहने के लिए।

हमें इस्राएलियों के उदाहरण से सीखना आवश्यक है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने पुराने नियम का इस्तेमाल सदा के लिए उचित नैतिक आचरण के उदाहरणों की पुस्तक के रूप मे किया। इस्राएलियों के दुर्व्यवहार से यह सबक देते हुए 1 कुरिन्थियों 10:1-12 में पौलुस ने यही किया: यदि हमें उद्धार का पक्का यकीन है तो हम ''चौकस रहें'' कि गिर न जाएं (आयत 12)। पौलुस ने यह भी लिखा, ''अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आपको जांचो'' (2 कुरिन्थियों 13:5)। यह शब्दावली इब्रानियों 4:11 से मेल खाती है: **ऐसा न हो कि कोई जन गिर पड़े। उनके समान** (*hupodeigma*, जिसका अर्थ ''नमूना'' या ''प्रति'' है) एक बार फिर दिखाता है कि पुराने और नये दोनों नियमों में हमारे लिए उदाहरणों की भरमार है। यहां पर हम अपने विश्वास को कमज़ोर न होने देकर गिरने के विरुद्ध चेतावनी का एक बुरा उदाहरण देखते हैं। 2 पतरस 2:6 में सदोम और अमोरा के सम्बन्ध में ''दृष्टांत'' के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है। यह नगर आज भी उन सब के लिए जो अभक्ति का जीवन बिताते हैं आने वाले विनाश के उदाहरण का काम करते हैं। बाइबल अपने आप में पूरी तरह से यह दिखाते हुए कि कैसे जीना चाहिए और कैसे नहीं, उदाहरणों का निरन्तर नमूना है। यह कहना कि ''पवित्र शास्त्र के अधिकार का कोई नमूना नहीं है'' ईश्वरीय प्रकाशन की प्रकृति को ही न समझ पाना है।

यदि हम मृत्यु के तुरन्त बाद अनन्त स्वर्ग में प्रवेश नहीं करते तो यह तो सच है कि हम उस समय कहीं न कहीं ''प्रवेश'' करेंगे। यदि मृत्यु के समय हम सीधे स्वर्ग में प्रवेश नहीं करते, तो यीशु की शिक्षा, या स्थिति बहुत बदल गई होनी चाहिए क्योंकि उसने लूका 16:19-31 में

धनवान और लाज़र का उदाहरण दिया था।

मसीही लोगों के लिए परमेश्वर का वचन (4:12, 13)

[12]क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है। [13]सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और प्रकट हैं।

यह कहने के बाद कि परमेश्वर के वचन का अपमान एक गम्भीर गलती है 4:4–11 वाली चेतावनी आयतें 12 और 13 में खत्म हो जाती है। प्रासंगिक सम्बन्ध इस बात का संकेत देता है कि आयत 12 में ''वचन'' बोलकर कहा गया है, जैसा कि भजन संहिता 95 में दिया गया है, या लिखकर, परमेश्वर का वचन ही है, क्योंकि '' 'लिखित पवित्र शास्त्र' को 'परमेश्वर का वचन' कहा गया है।''[31]

आयत 12 में चार यूनानी कृदंतों ''जीवित,'' ''प्रबल'' ''छेदता,'' और ''जांचता'' ध्यान देने योग्य है। बाइबल परमेश्वर का ''जीवित'' वचन है क्योंकि इसे जीवन परमेश्वर की ओर से मिलता है। यह ऊर्जा देने या बल देने में ''प्रबल'' है जिसका अर्थ यह है कि यह अपने उद्देश्य को पूरा करने में सक्ष्म है। यह ''छेदता'' भी है; अपने लिखित वचन के द्वारा परमेश्वर हमें अपनी सच्चाई से हमारे अन्दर तक छेद डालता है। उसके संदेश की निरुत्तर करने वाली सामर्थ से हम अपने आपको दोषी पापियों के रूप में देखने लगते हैं। फिर पवित्र शास्त्र के संदेश में दिखाए गए अनुग्रह के द्वारा हम उसके अनन्त विश्राम में प्रवेश करने की महिमामय आशा में विश्वास करने लगते हैं। अन्त में परमेश्वर का वचन ''जांचता'' है क्योंकि परमेश्वर हमारे मनों को जानता है। उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं है (आयत 13)।

आयत 12. परमेश्वर का लिखित **वचन जीवित** [*zaō*] **और प्रबल** (*energēs*) है। परमेश्वर का वचन मनुष्य के मन के विचारों को पहचानकर सामने लाता है। कितना अद्भुत दावा है! कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर के वचन को जीवित क्यों कहा गया है! (देखें प्रेरितों 7:38; 1 पतरस 1:23.) ''परमेश्वर का वचन जीवित, सक्रिय रूप में जीवित और जैसा कि काल से संकेत मिलता है, निरन्तर सक्रिय है। यह सामर्थी है।''[32] यह बात कि परमेश्वर का वचन ''प्रबल'' है, यशायाह 55:11 का स्मरण दिलाता है जहां नबी ने घोषणा की कि परमेश्वर का ''वचन'' उसके पास ''खाली'' या ''व्यर्थ'' (KJV) नहीं आएगा, बल्कि जो कुछ उसने ठाना है उस क्रिया को पूरा करेगा। परमेश्वर से कुछ भी छुपाया नहीं जा सकता इसलिए यह सही है कि उसने सुसमाचार को हमारे प्राण के हर भाग को प्रभावित करने और हमारी नाकामियों को दिखाने के लिए तैयार किया।

हमें अपने आप दिखाने के अलावा परमेश्वर अपने वचन में हमें अपना आप भी दिखाता है। परमेश्वर और उसके वचन के बीच सबसे सम्भव निकट सम्बन्ध है।[33] यह सम्भव है कि

आयत 12 में ''परमेश्वर का वचन'' स्वयं परमेश्वर के लिए वाकचक्र (गोल-मोल हवाला) हो क्योंकि आयत 13 आसानी से परमेश्वर के बात करने की ओर मुड़ जाती है।[34] वचन बता सकता है कि पाठक आत्मिक रूप में कहां पर बीमार है और उसकी आत्मा की बीमारी के लिए सही दवाई दे सकता है। परमेश्वर का संदेश मर चुके अतीत के लिए नहीं बल्कि ''आज'' हमारे लिए जीवित है (आयत 7)।

आयत 12 में ''वचन'' यीशु मसीह के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द *logos* से लिया गया है।[35] कुछ प्राचीन लेखक यहां भी यीशु के हवाले को देखते थे। वे इस विचार को मानते थे क्योंकि उन्हें परमेश्वर के वास्तव में बोले या लिखित वचनों में वैसी सामर्थ नहीं लगती थी जैसी बताया जाता है। परन्तु वे उस चरम तक नहीं जाते थे जिस तक आज के कुछ संदेहवादी लोग चले जाते हैं जो परमेश्वर के लिखित वचन को थोड़ी या बिल्कुल नहीं सामर्थ वाले मृत पत्र के रूप में देखते हैं।

''परमेश्वर का वचन ...'' **हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है।** बहुत सम्भावना है कि ''वचन'' का अर्थ यीशु मसीह के हवाले के बजाय पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की ओर से अन्य सभी संदेशों के साथ मसीह के द्वारा बोला गया सुसमाचार संदेश है। ''वचन 'पहचानने वाला' या 'समीक्षक' है।'' इस्राएलियों ने उन्हें दोषी ठहराने के लिए वचन को अनुमति देने के बजाय परमेश्वर के वचन की आलोचना की। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपनी मीरास को खो दिया।[36]

''छेदता'' (*diikneomai*) सुझाव देता है कि वचन में अपने आप में जीवनों को बदले और हमारी मनोवैज्ञानिक और आत्मिक बनावट को बदलने की सामर्थ है; सुसमाचार में उद्धार दिलाने की सामर्थ है (रोमियों 1:16)। जिस प्रकार से परमेश्वर ने बीज में अपने आप प्रजनन के लिए जीवन रखा है, उसी प्रकार से अपने आप में जीवन होने के कारण उसका वचन बीज की तरह है (1 पतरस 1:23)। ''[राज्य का] बीज परमेश्वर का वचन है'' (लूका 8:11)। इस प्रकार से परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ वचन उस बीच की तरह है जो बीज अंकुर निकालता, बोने वाले को बीज और खाने वाले को रोटी देता है (यशायाह 55:10)। यह वह अविनाशी बीज है जो मसीही व्यक्ति को नया जीवन देता है। हमें ''सुसमाचार के द्वारा ...'' जन्म दिलाया जाता है (1 कुरिन्थियों 4:15; KJV)। जैसा कि NASB में भी दिखाया गया है पौलुस इस प्रकार से ''सुसमाचार के द्वारा तुम्हारा पिता हुआ।''

वचन जीवित है क्योंकि ''इसमें हर जीवन के स्रोत स्वयं परमेश्वर के वास्तविक स्वभाव की झलक मिलती है।''[37] यह जीवित है क्योंकि इसे ले पाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर आज भी अपने सभी उद्देश्यों और प्रतिज्ञाओं के प्रमाण को प्रभावित करता है। परमेश्वर के वचन में उसी की इच्छा और उसकी प्रतिज्ञाएं मिलती हैं, जिसके पीछे वह स्वयं होता है। परमेश्वर ने बात की और संसारों की रचना की (इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर की ओर से आए वचनों (भजन संहिता 95:7-11) से उसके विश्राम में प्रवेश न करने की सम्भावना की चेतावनी देते थे; उसके वचन ही पापियों को उसकी उपस्थिति से दूर रख सकते हैं! व्यक्ति को चाहिए कि परमेश्वर को उसके वचन से अलग न करें।

जॉन कैल्विन के अनुयायियों का मानना है कि वचन में पवित्र आत्मा के मन पर अलग से से काम किए बिना कोई वास्तविक शक्ति नहीं है। कैल्विन का कहना था, "क्योंकि जैसे अपने ही वचन में परमेश्वर अपनी गवाही के लिए काफ़ी है, वैसे ही वचन मनुष्यों के मनों में तब तक कभी नहीं बसेगा जब तक यह आत्मा की भीतरी गवाही से पक्का नहीं होता।"[38] यह इस बात को नज़रअन्दाज़ कर देता है कि वचन को पक्का होना पहली सदी में दे दिया गया था जो हमें विश्वास दिलाने, आज्ञा मानने और उद्धार दिलाने के लिए काफ़ी है (मरकुस 16:17–20; यूहन्ना 20:30, 31; इब्रानियों 2:1–4)। अतिरिक्त पुष्टि की आवश्यकता का कोई भी दावा सुसमाचार की विश्वास दिलाने वाली सामर्थ को नकार देता है। ऐसा दावा इस बात का इकरार करता है कि मर रही आत्मा को नया जीवन देने के लिए परमेश्वर के वचन, बीज में कोई "जीवन" है (1 पतरस 1:23)। यह विचार पवित्र शास्त्र की एक गलत व्याख्या पर आधारित है। जो प्रेरितों को दी गई प्रतिज्ञाओं से लेकर आधुनिक मनुष्यों को देने में बदल दिया गया है (यूहन्ना 14:26; 16:12, 13; 1 कुरिन्थियों 2:10–13)।

"छेदता" शब्द इब्रानियों की पुस्तक में केवल यहीं मिलता है। "जल गए" की तरह यह लूका का विचार है (प्रेरितों 5:33; 7:54)। यह किसी के विरोधी को उत्तर न दे सकने पर मन के विश्वास या कड़वे क्रोध के होने का सुझाव देता है। सुसमाचार की "जलाने वाली" सामर्थ प्रेरितों 2:36–38 में दिखाई देती है। जो कुछ लोगों ने "सुना" था उसके कारण बहुतों के "हृदय छिद गए" थे। सुसमाचार संदेश ने उन्हें निरुत्तर कर दिया था। प्रेरितों 2:37 में KJV में *katanussō* का अनुवाद "छिद गए" बहुत कमज़ोर है। इसी शब्द का इस्तेमाल सिपाही को शरीर में घुसेड़ने वाले भाले की बात बताने के लिए प्राचीन कवि होमेर द्वारा इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया। वचन की सामर्थ की स्पष्ट व्याख्या इस प्रकार है:

> यह व्यक्ति के जीवन के गहरे और सबसे गुप्त भागों में घुस जाता और उसके निम्न पाश्विक जीव को इसकी इच्छाओं, रुचियों और लगावों सहित, उसके उच्च आत्मिक जीवन से परमेश्वर के साथ आत्मिक सहिभागिता की इसकी तम्मनाओं सहित काट डालता है, बिल्कुल वैसे जैसे दोधारी तलवार शारीरिक देह के **गांठ गांठ और गुदे गुदे को** काट डालता है। यह बाहरी रूपों को नहीं देखता, बल्कि *मन के* विचारों और इरादों को जांचने में निपुण है।[39]

निरुत्तर करने और बदलने का काम आत्मा का है (यूहन्ना 16:7); इसे पतरस के द्वारा बोले गए वचन के द्वारा पूरा किया गया था जिसे प्रेरितों 2:36–41 में आत्मा के द्वारा अगुआई दी गई थी। इसलिए हम आत्मा के प्रकट किए गए संदेश के द्वारा बदलते हैं। "आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें में ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी है" (यूहन्ना 6:63)। आत्मा अपने ईश्वरीय वचन के द्वारा जीवन देता है। यदि यीशु के चेले सचमुच में उसके मांस को खा सकते, जैसा कि कुछ लोगों का मानना है कि प्रभु भोज में खाया जाता है, तो उससे उनका कोई अनन्त भला नहीं होता; क्योंकि जीवन देने वाला शरीर नहीं बल्कि वचन है। इस लक्ष्य को पाने के लिए उस वचन को सुना जाना, विश्वास किया जाना और माना जाना आवश्यक है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस वचन को "आत्मा की तलवार" कहा गया है

(इफिसियों 6:17)। यह "हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है" (आयत 12) जो मसीह (वचन/लोगोस) के लिए नहीं कहा गया होगा। प्रकाशितवाक्य 1:16 मसीह को अपने मुंह से निकलने वाली तलवार के साथ दिखाया गया है। चाहे वह एक अलग संदर्भ में एक अलग आकृति है, पर यह मसीही और उसके वचन की सामर्थ का सुझाव देता है।

यह विचार कि "वचन" यह है कि परमेश्वर लोगों के मनों से नये नियम से बाहर सीधे बात करता है बाइबल का नहीं है।

"गांठ-गांठ और गुदे - गुदे को अलग करके आर-पार छेदता है" एक दिलचस्प अभिव्यक्ति है। परमेश्वर का वचन अलग करने में प्रबल है! यह परिवारों और पुराने मित्रों को अलग कर देता है। आर. सी. एच. लैंसकी ने इस वचन को कई सांसारिक और बाइबल से बाहर की बातों के लिए लागू किया जो आत्मा का विरोध करती हैं। उसने आगे कहा, "संसार इनमें से कई गतिविधियों को अच्छी और यहां तक कि प्रशंसनीय कहकर तारीफ़ कर सकता है; वचन सीधे छेदता है और दिखाता है कि मन आत्मा से क्या कर रहा है।"[40] इस प्रकार यह अच्छे को बुरे से अलग करता है जो कि इसके अर्थ का आवश्यक भाग हो सकता है।

इसके अलावा, "परमेश्वर का वचन ..." **मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।** अनुवादित शब्द "जांचता है" के यूनानी शब्द (*kritikos*) का अर्थ "जांचने वाला" है (KJV; ASV)। परमेश्वर से कुछ छिप नहीं सकता है (आयत 13)।

आयत 13. वचन के न्याय से कोई बच नहीं सकता है: **सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और प्रकट हैं।** इस आयत का मुनष्य की प्रकृति से कोई सम्बन्ध है या केवल "मनुष्य के जटिल भीतरी स्वभाव में घुसने के परमेश्वर के वचन की अत्यधिक क्षमता को दिखाता" सामान्य कथन है?[41] क्या यह कहने का अलंकारिक ढंग है कि "परमेश्वर हमें अच्छी तरह से और पूरी तरह से जानता है?"[42] मनुष्य के सार का यह चित्रण 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 में सुझाए गए पौलुसी विचार के जैसा है: "... तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"

यह तीखा न्याय आने वाला है और हम पाप के दोषी है, और इस जीवन भर के संघर्ष में बने रहने के लिए शक्ति पाने की हमें क्या उम्मीद है। उत्तर आगे दिया गया है। "वचन" हमारे प्राणों को प्रकट कर देता है परन्तु फिर भी परमेश्वर ही है "जिसे हमें हिसाब देना है" (NIV; NKJV)। फिर "वचन" परमेश्वर का ही विस्तार दिखाई देता है। स्पष्टतया "वचन" के बहुत से अर्थ हैं, परन्तु हमें परमेश्वर के वचन के बारे में हमारे कामों का हिसाब देने के लिए बुलाया जाएगा। परमेश्वर के सामने खड़े होना और अपना सही सही प्रतिफल पाना कितना भयदायिक होगा! इस आयत को अन्तिम लेखा देने के लिए माना जाए क्योंकि हमारे परमेश्वर के सामने सब बातें "खुली" (*gumnos* से; मूलतया "नंगी") और "प्रगट" हैं। इसलिए हमें अपनी सहायता के लिए एक प्रतिनिधि की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की बात से लेखकी की अगली चर्चा का परिचय मिलता है।

हम मनुष्य के मन के बारे में बहुत कम जानते हैं, परन्तु हम जानते हैं कि परमेश्वर का वचन भीतरी मनुष्य की हर आवश्यकता को पूरा करता है क्योंकि यह उसके द्वारा दिया गया था

जिसने हमें बनाया है और हमें अच्छी तरह से जानता है। इसको समझें और विचार करें कि हमें उसी को लेखा देना है (आयत 13)। वह हमारा न्याय अन्त के दिन अपने ठहराए हुए पुत्र के द्वारा करेगा (प्रेरितों 17:30, 31)। परमेश्वर के वचन (आयत 12) और स्वयं परमेश्वर (आयत 13) के बीच कोई विसंगति नहीं है, क्योंकि दोनों के साथ साथ रहते हैं। हमें परमेश्वर या उसके वचन को तुच्छ नहीं मानना चाहिए। हम उसकी इच्छा को मानकर उसके वचन की आज्ञा मानें ताकि हम उसके विश्राम में प्रवेश कर सकें।

महायाजक के रूप में हारून पर मसीह की श्रेष्ठता (4:14—5:10)

परमेश्वर तक मसीह की पहुंच (4:14–16)

[14]इसलिए जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। [15]क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। [16]इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

नबियों, स्वर्गदूतों और मूसा के ऊपर मसीह की श्रेष्ठता को दिखाने के बाद इब्रानियों का लेखक महायाजक के रूप में हारून पर उसकी श्रेष्ठता को दिखाने के लिए मुड़ा। 4:14–16 में उसने लिखा कि परमेश्वर के सिंहासन पर हमारा एक प्रतिनिधि है जो उससे बड़ा है जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं और हमारे लिए वे बातें करता है जिनका हम सपना भी नहीं देख सकते। ये तीन आयतें इस बड़े महायाजक के बारे में चार सच्चाइयों की पुष्टि करती हैं। (1) वह स्वर्गों से होकर गया है, जिसका अर्थ यह है कि पृथ्वी का उसका काम पूरा हो चुका है। (2) वह हमारे साथ पूरी सहानुभूति कर सकता है। (3) उसने परीक्षा के द्वारा आज्ञा मानना सीखा। (4) वह हमारे अनन्त उद्धार का कर्त्ता है। मुख्य विचार यह है कि मसीह के याजकाई के काम के द्वारा अब परमेश्वर तक हमारी पूरी पहुंच है।

आयत 14. महायाजक (*archiereus*) शब्द का इस्तेमाल मुख्यतया यहूदी मायाजक के लिए किया जाता था; परन्तु यहां इसे **यीशु** के लिए लागू किया गया है जो याजक भी है और राजा भी। जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की थी कि मसीहा अपने सिंहासन पर याजक और राजा के रूप में काम करेगा (जकर्याह 6:13)। पुराने नियम में इस्राएल के किसी राजा के लिए दोनों काम करने की अनुमति नहीं थी। मसीह बड़ा है क्योंकि वह पुरानी वाचा के महायाजक से बहुत श्रेष्ठ है, चाहे यहूदी वाद में उसकी कितनी भी बड़ी स्थिति थी। यहूदी मसीही लोग जो अपनी विरासत की ओर लौटने के प्रलोभन में थे उन्हें यह जानना आवश्यक था कि उनके पास एक महायाजक है जो व्यवस्था के अधीन किसी भी महायाजक से श्रेष्ठ था। यहां से आरम्भ करके अध्याय 10 तक लेखक ने मूसा के संस्थानों तथा डिज़ाइनों के अर्थ की पूरी समझ को दिखा

दिया। हमारे नये महायाजक के सम्बन्ध में यह तर्क 7:28 के साथ खत्म हो जाता है परन्तु यह विचार एक स्वीकार्य तथ्य के रूप में फिर से 8:1 में उठता है।

वे इब्रानी लोग जिन्होंने पड़ा कि हमारा महायाजक "यीशु" **परमेश्वर का पुत्र** है उन्हें यह बड़ा अजीब लगा होगा। निश्चय ही वे फरीसियों की तरह भौचके नहीं रहे होंगे जब यीशु ने उन्हें मत्ती 22:43–46 में भजन संहिता 110:1 को उद्धृत करते हुए चुनौती दी:

> उस ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? कि
>
> प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा;
> मेरे दाहिने बैठ,
> जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं।
>
> भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाब न हुआ।

यीशु के प्रश्न में जो दाऊद के बोल पर आधारित था। मसीहा के "दो प्रभुओं" में से एक होने की बात की जो कि यहूदियों के लिए ठोकर का बड़ा पत्थर था। वे दिल से केवल एक प्रभु परमेश्वर पर और केवल उसी पर विश्वास करते थे। यीशु अब दूसरा "प्रभु" दिखाई दिया था। ऐसे पद और रुतबे को पाने का अर्थ था कि वह "परमेश्वर का पुत्र" है। यहूदियों के लिए यह बड़ी परीक्षा का कारण बन गया: क्या वे यीशु को पूरी तरह से सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र और अपने नये महायाजक के रूप में ईश्वरीय होना मान सकते थे? क्या वे "दो प्रभुओं" को स्वीकार कर सकते थे? यदि उन्हें इस अवधारणा की समझ होती तो वे विश्वास में पक्के होने के मार्ग में होते।

हमें **अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे** रहने के लिए कहा गया है, वैसे ही जैसे यीशु अपने उद्देश्य में दृढ़ रहा। "थामे रहने" का अर्थ के विश्वास में बने रहने से बढ़कर है क्योंकि सच्चे विश्वास में सार्वजनिक प्रदर्शन भी शामिल है। हमें "इसे थामे रहना और इसे बताना" आवश्यक है।[43] मौखिक और शारीरिक हमलों से जिस प्रकार प्रभु ने दुख उठाया वैसे ही उम्मीद करते हुए हमें "छावनी के बाहर" निकलना आवश्यक है (13:13)। इस दुष्ट संसार के बीच उदासीन चेला बनकर अधिक देर तक नहीं रहा जा सकता। पौलुस ने समझाया कि यदि हम "जीवन के वचन" को थामे रहते हैं तो हम "जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई" देंगे (फिलिप्पियों 2:15, 16)। दूसरों के लिए प्रकाश बनना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

पुरानी वाचा के अधीन महायाजक परम पवित्र स्थान में साल में एक बार जाया करता था, परन्तु यीशु हमारे लिए **स्वर्गों से होकर गया है**। जोसेफ़स का कहना था कि परम पवित्र स्थान स्वर्ग के जैसा था।[44] हमें आश्चर्य नहीं होता कि इब्रानियों के लेखक ने यीशु के परम पवित्र स्थान के आगे "स्वर्गों" में जाने को दिखाया है। स्वर्गों "से" जाने का अर्थ वह अत्याधिक सामर्थ है जो किसी भी स्तर पर किसी सांसारिक याजक के पास नहीं है।

बहुवचन शब्द "स्वर्गों" (*ouranos*) इब्रानी शब्द *shamayim* की झलक देता है जो

पुराने नियम में तीन सौ से अधिक बार बहुवचन रूप में ही मिलता है। इफिसियों 4:10 कहता है कि मसीह "सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया।" अब वह हर सांसारिक रोकथाम से ऊपर है। वह सामर्थ और महिमा में भौतिक संसार से ऊपर है। बी. एफ़. वैस्टकोट ने सामान्य बात को उद्धृत किया कि वह " 'स्वर्ग में प्रवेश कर गया' और अभी 'स्वर्गों से ऊपर' है।"[45] यहूदी परम्परा में सात स्वर्गों की बात की जाती थी जबकि पौलुस ने तीन की बात की (2 कुरिन्थियों 12:2)। यह "तीसरा" स्वर्ग सबसे ऊंचा लगता है, इस कारण यह इस विचार को नामुमकिन कर देता है कि चार ऊंचे स्वर्ग हैं।[46]

आयत 15. यीशु मनुष्य और परमेश्वर दोनों है–दो **महायाजक** जो मनुष्य का प्रतिनिधित्व परमेश्वर के सामने करता है और परमेश्वर का पुत्र जो परमेश्वर का प्रतिनिधित्व मनुष्य के सामने करता है। इब्रानियों के पाठकों को मन्दिर की शान और इसके महायाजक के प्रति बहुत लालसा थी, उन्हें यह समझने की आवश्यकता थी कि अब उनके पास एक उद्धारकर्त्ता है जो उनके **समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला**। कोई पूछ सकता है, "परन्तु यीशु ने तो कभी पाप नहीं किया, तो वह हमारे समान कैसे परखा गया हो सकता है?" वह हमारे साथ **दुखी** हो सकता है क्योंकि पाप को समझने का अर्थ यह नहीं है कि पाप करने में भागीदार होना, बल्कि इसके विपरीत इसके प्रलोभन के दबाव का सामना करना है। हार मानने से इनकार करके यीशु ने दिखाया कि हम जय पा सकते हैं।

"दुखी" होना (*sumpatheō*) शब्द केवल इब्रानियों में मिलता है। यहां इस्तेमाल के अलावा यह शब्द कैदियों के साथ *सहानूभुति* दिखाने के लिए मसीही लोगों के लिए ताड़ना के साथ 10:34 में मिलता है। मसीही लोगों को मसीह की तरह ही सहानुभूति रखने वाले लोग होना आवश्यक है। "दुखी" होने के लिए सहानूभुति शब्द जो केवल बिना कारण दुख सहता है करुणा को दिखाता है बल्कि दुख में शामिल होकर इसे अपना बना लेने वाले की भावना को दिखाता है।[47] हमारा महायाजक कमज़ोर और दीन-हीनों के साथ दुखी हो सकता है।[48] सच्ची सहानुभूति प्रभु के प्रति मनुष्यों के लिए एक कठिन गुण है परन्तु कमियों के बावजूद मसीही व्यक्ति अपने प्रभु के जैसा बनने का प्रयास करता है।

परखे जाने की असली शक्ति तक पहुंचने से पहले इसके सामने हार मान लेने वाला व्यक्ति पाप के केवल वहीं तक जान सकता है उसके आगे नहीं, क्योंकि वह सबसे बड़ी परीक्षा तक पहुंचने से पहले ही दोष में गिर गया है।

परीक्षा से पहचान हमें दूसरे पापियों पर करुणा करने वाले बना सकती है। यीशु ने मनुष्य होने का अनुभव किया है, मरने के दर्जे तक (देखें फिलिप्पियों 2:8)। अब उसे स्पर्श किया जा सकता है (आयत 15; KJV)। वह कठोर और भावनाहीन नहीं है। न ही वह ऊंची की गई कुर्सी पर जो भीड़ के ऊपर से ले जाई जा रही हो बैठा है। यीशु पूरी तरह से हमारे जैसा बन गया। उसका सामर्थपूर्ण उदाहरण यह दिखाता है कि हम भी मुकाबला कर सकते हैं।

उसने अपनी कमियों में दुख सहा, जैसे हमें अपनी कमियों में सहना आवश्यक है; परन्तु उसने कठिनाइयों को परमेश्वर की अपनी सेवा में रुकावट नहीं बनने दिया (आयत 15)। उसने दूसरों में शारीरिक पीड़ा, थकावट और निराशा का सामना किया। उसने हमेशा पिता की इच्छा को पूरा करने का इरादा रखा। वह दानिय्येल की तरह था जिसने "अपने मन में ठान लिया कि

वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए'' (दानिय्येल 1:8)। हम यह कभी इनकार न करें कि यीशु परखा गया था! जेम्स बर्टन काफमैन का मानना था कि उसकी सबसे बड़ी परीक्षा ''बिना विचार किए सब कुछ रद्द कर देने, छुटकारे के अपने मिशन को छोड़ देने, स्वर्गदूतों की सेनाएं बुला लेने की थी'' और अपने शत्रु को क्रूस पर मरे बिना हरा देने की।[49]

मसीह अन्तिम सीमा तक परीक्षाओं और दुखों में से निकला इस कारण वह हमारी निर्बलताओं को समझता है। वह मनुष्यजाति के साथ सहानुभूति कर सकता है। ''परीक्षा के सामने कभी हार न मानने के कारण मसीह किसी भी बुरे से बुरे पापी से बढ़कर शैतान की सामर्थ को अधिक जानता है।''[50]

''परखा गया'' के लिए शब्द (*peirazō* से) का अर्थ ''परीक्षा में पड़ा'' है। यीशु के ''परखे'' जाने के लिए जो हम सोचते हैं हो सकता है वह उसके विश्वास के परखे जाने और दृढ़ता से बढ़कर हो, परन्तु इस शब्द का अर्थ ''परख'' और ''परीक्षा'' दोनों हो सकते हैं। इब्रानियों पुस्तक यह सुझाव नहीं देती कि वह अवांछनीय व्यवहार में लगने के लिए ''परखा गया,'' बल्कि बाग में की गई उसकी प्रार्थनाओं और क्रूसारोहण में उसके सहे गए उसके दुख के द्वारा उसकी वफ़ादारी के परख जाने पर ध्यान दिलाता है (5:7, 8)। उसकी परीक्षाएं वैसे ही थीं जैसी मसीही लोगों के सामने जब यह पत्री लिखी गई थी। मज़बूत विश्वास वाले व्यक्ति के लिए परखे जाने की बात इतनी बड़ी परीक्षा नहीं होनी थी।

यीशु ने पाप की परीक्षा के सामने हार माने बिना दुख सहा (आयत 15; 1 पतरस 2:20–22) इस कारण आम तौर पर एक स्वाल पूछा जाता है कि ''क्या यीशु सचमुच पाप कर सकता था?'' यदि नहीं तो यह परीक्षा नहीं थी! यह विचार कि वह पाप नहीं कर सकता था शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा किए जाने के विवरणों का मज़ाक उड़ाना है (मत्ती 4:1–11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1–13)। यदि यह विवरण उस परीक्षा की बात करते हैं जिसके आगे यीशु हार नहीं मानता था, तो सारी कहानी ही बेकार का नाटक है।

वह परखा गया परन्तु परखा जाना कोई पाप नहीं है। याकूब ने कहा कि ''प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर परीक्षा में पड़ता है'' (याकूब 1:14)। शैतान हमारी अभिलाषाओं को बढ़ाने में सफल हो सकता है परन्तु यीशु ने इसी पर जय पाई। सुझाव दिया गया है कि परमेश्वर होने के कारण यीशु पाप नहीं कर सकता था;[51] परन्तु यदि हम यह सोचते हैं कि उसने केवल अपने ईश्वरीय स्वभाव के कारण पाप पर विजय पाई तो हम गलत हैं। बाइबल की शिक्षा यह है कि वह उस सब के द्वारा जिसमें वह परखा गया तब भी वह निष्पाप रहा।

संघर्ष करते लोग कह सकते हैं, ''यीशु को ऐसी परीक्षा कभी नहीं पड़ी जैसी मेरे सामने है।'' ''निष्पाप'' होने का अर्थ यह नहीं है कि वह कभी परखा नहीं गया। यह मानने वालों से कि सब लोग ''पापी स्वभाव'' के साथ जन्म लेते हैं, हम पूछ सकते हैं, ''क्या यीशु को हम से अलग विरासत मिली? यदि नहीं तो क्या उसकी परीक्षाएं उसके अपने 'पापी स्वभाव' से बड़ी''? यदि वह परखा जा सकता तो उसमें पाप करने की क्षमता भी होनी चाहिए थी; नहीं तो यह परीक्षा नहीं होनी थी।

फिलो ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यहूदियों का महायाजक परम पवित्र स्थान में प्रवेश

करने पर मनुष्य से अधिक हो जाता था, और परमेश्वर और मनुष्य के बीच की उसकी सीमा परमेश्वर के इस सेवक को पाप और दूषण से मुक्त रखती थी।[52] निश्चय ही यरूशलेम के याजकों को इस पर विश्वास करने से बेहतर पता था, परन्तु पहली सदी के अन्य यहूदियों ने ऐसे ही विचार बना लिए होंगे। इब्रानियों में उत्तर यह है कि यीशु पूरी तरह से उन मानको को भी पूरा करने के योग्य था जिन्हें पूरा करने की बात की कल्पना फिलो ने भी नहीं की होगी।

आयत 16. ऐसी समझ रखने वाला महायाजक होने के कारण हम उसके द्वारा नियम, लगन और दृढ़ता से पिता के पास जा सकते हैं। **निकट चलने में** हमारे पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करने का अवसर भी अवश्य होगा।

हमें दया के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। यह आयत में ऐसी प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करनी है। ''निकट चलें'' वाक्यांश एक सामान्य वाक्यांश है और पत्री की एक मुख्य बात है। 7:19, 25; 10:1, 22; 11:6 में इसका इस्तेमाल हुआ है। 6:18 में इस विचार का संकेत मिलता है।

''निकट चलें'' के लिए यूनानी शब्द (*proserchomai*) उन याजकों से सम्बन्धित है जो आराधना भरी सेवा में अकेले परमेश्वर तक पहुंच सकते थे।[53] अब यही सुअवसर सब मसीही लोगों को दिया गया है।[54]

मन्दिर के परमपवित्र स्थान में केवल महायाजक ही प्रवेश कर सकता था। शुद्ध याजक पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकते थे। बाहरी आंगन में प्रवेश भक्त और पवित्र किए हुए यहूदी पुरुषों के लिए था। यहूदी आंगन के बारह अन्यजातियों का आंगन था और उसके थोड़ा आगे स्त्रियों का आंगन था। यीशु ने उन सभी बाधाओं को हटा दिया। हमें अपने पिता के ''निकट आने'' की वेदी तक अनुमति है (देखें 10:22)। प्रार्थना में हम स्वयं परमेश्वर के निकट आकर परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं। उस तक हमारी हर समय पहुंच है। वियर्सबे ने सुझाव दिया,

> जब कोई इस्राएली परीक्षा में पड़ता था तो वह आसानी से सहायता के लिए महायाजक के पास नहीं भाग सकता था; और निश्चय ही वह परमेश्वर की सहायता के लिए परम पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था। परन्तु यीशु मसीह ने विश्वासियों के रूप में हम किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में अपने महायाजक के पास भाग सकते हैं और उस सहायता को पा सकते हैं जिसकी हमें आवश्यकता हो।[55]

उस तक हमारी पहुंच काफ़िरों की तरह नहीं है जो अपने देवताओं की ओर भय से कांपते हुए जाते थे।

यहां तक कि यहूदी भी यह प्रार्थना करने का साहस नहीं करता था, ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है'' (मत्ती 6:9)। ईश्वरीय परमेश्वर के साथ वह सम्बन्ध पुराने नियम में नहीं बना था। मसीही लोगों के रूप में यह जानते हुए कि पुत्र को समझ है और वह **अनुग्रह के सिंहासन** तक हमारी पहुंच बनाता है, जहां वह अपने पिता के दाहिने हाथ है और हमारी बात सुनने के लिए अपना कान लगाए रखता है, **हियाव बांधकर** उसके पास जा सकते। बेशक यदि हम अपने गुणों के आधार पर परमेश्वर के सामने जाते तो हमारी न सुनी जाती।

''अनुग्रह का सिंहासन'' ''परमेश्वर का सिंहासन'' कहने का एक और यहूदी ढंग था।

यह परमेश्वर का नाम लेकर इसका दुरुपयोग करने से बचने के लिए यहूदियों में विशेष था। ''सिंहासन'' स्वयं परमेश्वर को दर्शाने के लिए कोमल भाषा है। उसे ''परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है'' कहा जाता है (1 पतरस 5:10)। उसके लिए यह एक उपयुक्त शीर्षक है क्योंकि उसके स्वभाव का सार **दया** है। उसकी उपस्थिति में हम **वह अनुग्रह** पाते हैं **जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करता है**। हम चाहे माने या न माने पर हमें आवश्यकता रहती ही है। परमेश्वर के दयालु स्वभाव को जानना हमें प्रार्थना में हियाव से उसके पास आने और अपने स्वर्गीय पिता से खुलकर बात करने के योग्य बना देता है। यह अद्‌भुत विचार हमें कितना सुकुन देता है! परमेश्वर का सिंहासन वह स्थान है जहां उपकार चाहा और पाया जाता है। जब हम सिंहासन के निकट आते हैं, तो जिस प्रकार से हमारे उद्धारकर्त्ता ने कई अवसरों पर किया, हम उसकी महिमा की कुछ सांझ करते हैं।

इब्रानियों 4:14-16 और 10:19-23 में समानताएं देखी जा सकती हैं। दोनों ही अपने अंगीकार को थामे रहने और हियाव से परमेश्वर के निकट आने की बात करते हैं। यह पत्र बहुत संगठित लेख है; लेखक ने अपनी बातों को और बलपूर्वक कहते हुए विचारों पर चर्चा की और फिर उनकी ओर लौट गया। पहले 4:14-16 हमारे महायाजक के लाभों को दिखाता है और फिर 10:19-23 उनकी पुनः पुष्टि करता है। पाठकों के लिए समझाते हुए अध्याय 5 से 9 इस विचार की ओर वापस आना जारी रखते हैं। यहूदी मसीही याजकाई से भली भांति परिचित थे और तर्क से सबसे अधिक प्रभावित हुए होंगे।

हमारा महायाजक मसीह हमारे लिए विनती करता है। याजक और राजा के रूप में वह पहले महायाजक हारून और पुरानी वाचा के सभी याजकों से बहुत श्रेष्ठ है। चाहे उसने पाप रहित जीवित बिताया परन्तु उसे मालूम है कि दुख सहना और परीक्षा में पड़ना क्या होता है। वह हमारी कमज़ोरियों को समझता है और हम पर दया करता है।

और अध्ययन के लिए:
प्राण और आत्मा (4:12)

क्या ''आत्मा'' (*pneuma*) और ''प्राण'' (*psuchē*) में भेद किया जाना चाहिए या वह केवल एक ही बात के अलग-अलग रूप हैं? कई बार इनमें भेद करना कठिन होता है: क्या किसी का अपने ''प्राण'' को खोना अनन्तकाल के लिए अपनी आत्मा को खोना भी नहीं है (मत्ती 16:26)? ''प्राण'' के मरने की बात पढ़ी जा सकती है परन्तु आत्मा की नहीं। क्रूस पर यीशु ने अपनी ''आत्मा'' (*pneuma*) पिता को सौंप दिया था (लूका 23:46) न कि अपने ''प्राण'' को नहीं। कई बार लगता है कि ''प्राण'' में पूरा व्यक्ति शामिल है, जैसे जहाज़ में बचाए जाने वाले ''आठ प्राणी'' या ''प्राणों'' (*psuchē* से) के सम्बन्ध में (1 पतरस 3:20)। अन्य अवसरों में *psuchē* का अर्थ ''आत्मा'' वाला ही लग सकता है।

मनुष्य की प्रकृति वास्तव में उच्च है जो ''आत्मा'' शब्द से तय हुई होगी। उसकी निम्न प्रकृति उसका ''प्राण'' (*psuchē*) हो सकता है जिसका आम तौर पर किसी का पशु वाला जीवन होता है। ''आत्मा'' कभी मनुष्य की निम्न प्रकृति नहीं है। परमेश्वर का वचन प्राण को आत्मा से वैसे ही अलग कर सकता है जैसे यह गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग कर सकता

है।[56] इब्रानियों की पुस्तक की तरह हम सही ढंग से व्यक्ति की "देह," "प्राण" और "आत्मा" कह सकते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)। इन शब्दों को हम चाहे देखें परन्तु हमें इस बात का पता है कि परमेश्वर अनन्तकाल के लिए उद्धार पाने वाली नई आत्मिक देहों सहित महिमा में हमारे सम्पूर्ण व्यक्ति का उद्धार करेगा। एक दिन वह "अंधकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा" (1 कुरिन्थियों 4:5) जो हमारे मनों में वास करती हैं और हमारी प्रकृति की सब बातों स्पष्ट कर देगा। जॉर्ज वैसली बुचनन निश्चय ही यह कहने में सही था कि परमेश्वर का वचन "वे विभाजन और अन्तर" कर सकता है, जो मानवीय जीवों के लिए असम्भव है।[57]

1 थिस्सलुनीकयों 5:23 से मनुष्य की तीहरी प्रकृति का सुझाव मिलता है। परन्तु प्राण और आत्मा में अन्तर करने का प्रयास आम तौर पर गड़हे जाते प्रतीत होते हैं। एक ढंग यह है: "देह प्राण के लिए घर है जो देह को ढाढ़स देता है और आत्मा को परमेश्वर द्वारा वह चीज़ बनाने के लिए जो प्राण को इसके देह को ढाढ़स देते हुए निर्देश दे, तय किया गया है।"[58]

प्रासंगिकता

बाकी विश्राम (4:1–11)

हमारे मन को शांति मिल सकती है जब हमें उस सनातन "विश्राम" में पूरा भरोसा मिल जाए जिसे परमेश्वर विश्वासियों को देने की प्रतीक्षा रहा है। हमारा उत्तेजित और परेशान संसार निश्चय ही ऐसी शांति की आवश्यकता को समझता है। मसीही लोगों को परिश्रम से दूर रहने वाले आज्ञा दिए हुए सात्ताहिक दिन के बिना सब्त का विश्राम मिला है।[59]

पुराने नियम के सब्त का विश्राम नई वाचा में दिए गए विश्राम की पूर्वछाया थी, बलिदान के पुराने नियम के उपायों की तरह ही मसीह के काम का प्रतीक था। यहां से रूपों और परछाइयों पर एक सबक आरम्भ हो सकता है। समय ही बताएगा कि विश्वासियों को उनके परिश्रमों से वैसे आराम कब मिलेगा जैसे "परमेश्वर ने अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया" (4:10)। हमारा विश्राम न केवल यहूदी सब्त के विश्राम से मिलता होगा बल्कि "परमेश्वर के अपने आराम" से भी मिलता होगा।[60] परन्तु बिना कुछ किए हाथ पर हाथ धरे अनन्तकाल को बताने का विचार स्वर्ग का बाइबल का विचार नहीं है। हम अनन्तकाल तक व्यस्त हो सकते हैं परन्तु हम पर कोई बोझ नहीं होगा। "काम जब प्रेम के लिए किया जाता है तो यह श्राप नहीं होता, क्योंकि काम करने से आनन्द मिलता है; शिल्पकारिता का घमण्ड और उनकी भलाई जिन की इससे सेवा होती है। ऐसे काम का न होना सचमुच में जीवन का श्राप है।"[61]

"डर" (4:1)

डर के विषय पर पवित्र शास्त्र में असत्य सी शिक्षा मिलती है। यीशु ने कहा कि हमें डरना नहीं चाहिए (यूहन्ना 14:27) और पौलुस ने तीमुथियुस को यह कहते हुए समझाया कि परमेश्वर ने "भय की आत्मा नहीं थी" (2 तीमुथियुस 1:7)। फिर भी हमें "परमेश्वर से डरने" (1 पतरस 2:17; सभोपदेशक 5:7 से उद्धृत किया गया) और अपने उद्धार के काम को "डरते और कांपते हुए" करने को कहा गया है (फिलिप्पियों 2:12)। भजन संहिता की पूरी

पुस्तक में हमें परमेश्वर से डरने के हवाले मिलते हैं। नीतिवचन 9:10 कहता है, ''यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है ...।'' यीशु ने कहा ''... उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है'' (मत्ती 10:28)। दुष्ट आत्माएं विश्वास करती और कांपती हैं (याकूब 2:19)।

हमें आदर और सम्मानपूर्वक श्रद्धाभाव से दिल से परमेश्वर से डरना चाहिए। इब्रानियों 4:1 में हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा किए हुए विश्राम की अपनी खामी से डरने के लिए कहा गया है। इसलिए हर डर गलत नहीं हो सकता। नये नियम में अधिकतर हस्तलिपियों में ''डर'' के लिए यूनानी शब्द *phobeō* है जो *phobos* से लिया गया है, जिसका अर्थ मुख्यतया ''डर'' है परन्तु इसमें श्रद्धापूर्वक आदर शामिल है। वास्तव में सिद्ध प्रेम डर को निकाल देता है (1 यूहन्ना 4:18), परन्तु हम में से किसके पास *सिद्ध* प्रेम है? जो भी लोग निर्बल, अपरिपक्व या मसीही *सिद्धता* से कम हैं उन्हें कुछ और डर होने की आवश्यकता है। डर की बात हमें सीधे और तंग मार्ग पर बने रहने के लिए आवश्यक है (मत्ती 7:14; KJV)। पीछे हट जाने के कगार पर लोगों से इब्रानियों के लेखक ने कहा, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (10:31)। 12:28 में उसने चेलों से ''भक्तिपूर्ण भय'' (*eulabeia*) रखने का आग्रह किया जिसका अर्थ श्रद्धापूर्वक भय या आदर है परन्तु इमसें डर का संकेत भी है। एक प्रकार का ''फोबिया'' के लिए ''भय'' के लिए यूनानी शब्द से निकाल शब्द के बिना हम परमेश्वर के पीछे नहीं चल सकते। यह एक तथ्य है कि बहुत से लोग परमेश्वर की आज्ञा तब तक नहीं मानेंगे जब तक उन में पश्चात्ताप न करने वाले पापियों के रूप में उसके हाथों में पड़ने के डर की बात नहीं होती। हमें उम्मीद है कि उनके ऐसे इरादे से परमेश्वर की ओर उनके मुड़ने से उनके मन दीन, आज्ञा मानने को तैयार और अन्त में प्रेम करने वाले होंगे जो उनके मनों से डरने की आवश्यकता को निकाल देता है।

''विश्वास के साथ मिला हुआ नहीं'' (4:2)

परमेश्वर की दृष्टि में भरोसा करने वाले या जीवित विश्वास होने के लिए आज्ञा मानने वाले विश्वास को मिलाया जाना आवश्यक है। मिस्र से निकलने और कनान की अपनी यात्रा आरम्भ करने तक इस्राएलियों ने परमेश्वर के सामर्थी कामों और उसकी महिमा को देखा था। परन्तु नपीलों अर्थात नपीली जाति वालों की बुरी रिपोर्ट के कारण इसकी सीमाओं पर रुक गए थे (गिनती 13; 14)। नपीली जाति वाले बेशक कद काठी में छोटे इस्राएलियों से बड़े थे, जिनकी खुराक मिस्र में दास रहते समय बहुत कम रही होगी। शत्रु के आकार ने इस्राएल की भावनाओं को प्रभावित करके लोगों के विश्वास का नाश कर दिया। परमेश्वर के सामने आकार का कोई महत्व नहीं होता, केवल विश्वास का होता है।

विश्वास आज्ञापालन के कामों के द्वारा दिखाया जाना आवश्यक है। नहीं तो यह ''मरा हुआ'' विश्वास है (याकूब 2:17), परन्तु विश्वास एक काम है, जिसे मनुष्यों के करने के लिए परमेश्वर ने ठहराया है (यूहन्ना 6:28, 29)। वह मारे मानों में विश्वास आश्चर्यकर्म के द्वारा नहीं डालता है; परन्तु उसने अपने वचन में प्रमाण दे दिया है, यदि उसे सुनकर ध्यान दिया जाए, जिससे विश्वास उत्पन्न होता है (रोमियों 10:17)। जैसा इफिसियों 2:8, 9 और रोमियों 3:28 में

कहा गया है, हमारे उद्धार को प्राप्त करने के लिए कामों को निकालकर ''व्यवस्था के काम'' या वे काम हैं जिनके द्वारा कोई अपने उद्धार के *कमाने* की कोशिश कर सकता है। जीवन में सिद्धता की हमारी कमी के कारण उद्धार को कमाना असम्भव है इसलिए यह याद रखते हुए कि *विश्वास* परमेश्वर द्वारा ठहराया वह काम है जिसे उद्धार प्राप्त करने के लिए हमें करना आवश्यक है, हमें उद्धार के माध्यम के रूप में विश्वास पर निर्भर होना आवश्यक है (यूहन्ना 6:29)। यदि मनुष्य उद्धार को प्राप्त करने के लिए कुछ नहीं करता है तो पतरस ने क्यों कहा, ''अपने आपको बचाओ'' (प्रेरितों 2:40; KJV) ? पतरस ने मसीही लोगों को क्यों सलाह दी कि ''डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ'' (फिलिप्पियों 2:12) ? निश्चय ही जब हम परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं तो पिता हमारे द्वारा काम कर रहा होता है। परन्तु किसी प्रकार के विवश करने वाले बल के द्वारा नहीं जो आज्ञा मानने के लिए हमारी व्यक्तिगत पहल या अनिच्छा को नज़रअन्दाज़ कर दे।

सांसारिक लोग आम तौर पर अपने प्राणों के अस्तित्व और अवश्यकताओं को आम तौर पर न समझकर भौतिक कूड़ा खाते हैं। बहुत साल पहले ऑस्ट्रेलिया के तट से सुदूरवर्ती क्षेत्र में तीन लोगों की लाशें मिलीं। वे भूख से मरे थे परन्तु उनके पेट भरे हुए थे। उन्होंने एक पौधा खा लिया था जिसमें भोजन का कोई गुण नहीं था। जिसमें वे निकम्मी वस्तुओं जिन्हें मनुष्यजाति जमा करती हैं–सांसारिक सफलता, अकादमिक प्राप्ति और सम्पत्ति–प्राण का पेट भरने के लिए बेकार हैं। जब वे लोग जिन्होंने सुसमाचार को सुना है पाप में मरते हैं, तो वे भी उन्हीं की तरह काफ़िर देश में पैदा हुए होंगे जहां बाइबलें ले जाने की अनुमति नहीं हैं।

संसार की सृष्टि के दिन (4:3, 4)

कुछ लोग इस विचार को मानते हैं कि सृष्टि का प्रत्येक दिन एक हज़ार वर्ष के काल का संकेत था और सात हज़ार वर्षों के बाद संसार का अन्त हो जाएगा। यह विचार हज़ार वर्ष की व्यवस्था वाले विचार का भाग है जिसका बाइबल में कोई आधार नहीं है। मान्यता यह है कि इसे 2 पतरस 3:8 का समर्थन है: ''... प्रभु के यहां एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है।'' यदि पतरस के कहने का अर्थ परमेश्वर के सामने एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, तो हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर होना चाहिए जो कि उसके कहने का अर्थ नहीं हो सकता। पतरस यह सुझाव दे रहा था कि परतेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को उचित समय पर पूरा करेगा, चाहे पहले हज़ार वर्ष बीत जाएं। हम कुछ देर के बाद अपनी प्रतिज्ञाओं को भूल जाने के आदि होती हैं परन्तु परमेश्वर नहीं है। ''दिन–हज़ार वर्ष की शिक्षा'' का विचार दूसरी सदी में पाया जाता था; यह *एपिस्टल ऑफ़ बरनबास* में ठहराया गया था (15:4, 5) और उसके बाद बीच बीच में इसे बढ़ावा दिया जाता है।[62] संसार की सृष्टि का काम पूरा करके परमेश्वर ने काम करना बन्द नहीं किया; उसने केवल सृष्टि की रचना करने से विश्राम किया।

आज परमेश्वर का दिन है (4:7)

परमेश्वर हर ''दिन'' को चलाता है और वह आपके कल को भी चलाएगा; वह अन्त में आपकी भलाई के लिए हर दिन को आशिष देगा (रोमियों 8:28)। वह आज और कल को

रोमांचकारी और अद्भुत बना सकता है। हमें इस विचार से निकलने वाले आशावाद को बनाए रखना आवश्यक है। एक नन्ही लड़की ने पुराने नियम की कुछ कहानियां सुनी और टिप्पणी की, ''तब परमेश्वर बहुत रोमांचकारी था।''[63] हमारा रुझान पीछे की ओर ऐसे देखने वाला होता है जैसे कलीसिया के सबसे बड़े दिन हमारे पीछे छूट गए हैं। 1950 और 1960 के दशक में अमेरिका में प्रभु की कलीसिया बहुत तेज़ी से बढ़ी परन्तु यह लगभग 50 वर्ष के धीमे विकास से निकली थी अब इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में अब हम फिर से परमेश्वर के राज्य को ज़बरदस्त ढंग से बढ़ते हुए देख सकते हैं।

धर्म के बारे में संसार बड़ी उलझन की स्थिति में और लोग बाइबल की सीधी सादी सच्चाई की मांग कर रहे हैं। परन्तु बहुत से लोग भले हैं और इसका उत्तर हर जगह ढूंढ़ते हैं पर बाइबल में नहीं। हाल ही में धार्मिक शिक्षाओं पर मेरे कॉलेज की क्लास में यह देखकर कि हमारे जवानों को साम्प्रदायिक कलीसियाओं द्वारा फैलाई जा रही शिक्षाओं की कितनी कम जानकारी है, मुझे हैरान नहीं होना चाहिए था। मेरी क्लास में एक धार्मिक समूह की शिक्षा पर चर्चा किए जाने के समय एक छात्र ने कहा, ''वे इस पर विश्वास कैसे कर सकते हैं?'' उत्तर यह है कि उनका पालन पोषण ही इसी में हुआ; उन्हें बचपन से यही मानना सिखाया गया है। यदि इतने अधिक लोग परमेश्वर के बारे में गलत विचारों जीते जा सकते हैं तो निश्चय ही हम अपने बीच और जोश भरी सुसमाचार प्रचार करने की आत्मा को बढ़ावा देकर नये नियम की सीधी सादी मसीहियत में लोगों को ला सकते हैं। जब हम लोगों को सच्चाई दिखा सकते हैं तो उन्हें बदलना आसान होना चाहिए।

हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम कुछ प्राप्त करने के लिए इतिहास में बहुत देर से पहुंचे हैं या प्रभु अपनी कलीसिया के ज़बर्दस्त विकास को पाने के लिए आपके और दूसरों के द्वारा काम करने की पहल नहीं करता। यह आज भी परमेश्वर का ''आज'' है!

''अपने मनों को कठोर न करो'' (4:7)

खुले मन से हर रोज परमेश्वर के वचन को सुनें और आपका मन कभी कठोर नहीं होगा।

> बदलाव के लिए परमेश्वर के आग्रह पर टालने वाले कंधे की हर उचकन, सिर का हर बार हिलना जो कहता है, ''मैं जानता हूं कि मुझे यह करना चाहिए, पर मुझे परवाह नहीं है,'' बिना भीतरी समर्पण से मेल हर बाहरी प्रयास मन को कठोर करता है जो मन फिराना कठिन से कठिन करता जाता है।[64]

जब तक हम जीवित रहते हैं तब तक यह हमारा ''आज'' ही होता है। मन फिराकर हम अपने मनों की कठोरता के आरम्भ पर काबू पा सकते हैं।

उस विश्राम में प्रवेश करने के लिए प्रयत्न करें (4:11)

इस विचार पर चिंता व्यक्त करने के बाद कि ''उद्धार कामों से प्राप्त किया जा सकता है,'' रेमंण्ड ब्राउंड जो यह सोचता है कि उन्हें सुसमाचार की आज्ञा के बाद कम महत्व वाला ''पवित्रीकरण'' पाना आवश्यक है, डांटने लगा। उसने तर्क दिया, ''यह अपने सुझाव के साथ

कि पवित्र किया हुआ मसीही बनने के लिए व्यक्ति को केवल अपने हर नस को ढीले करके नैतिक संघर्ष के हर विचार को त्यागना काफ़ी है, अपने सुझाव के साथ 'जाने दो और परमेश्वर जाने' की अवधारणा से कहीं बढ़कर स्वाद है।''[65] ऐसी धारणा यह सुझाव देती है कि अपना उद्धार पाने और उसे पाए रखने के लिए हमें कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह भी ''कामों'' से उद्धार होगा। यदि हम यह कल्पना करें कि हमारा उद्धार और पवित्र किया जाना केवल परमेश्वर को हमारी समस्याओं की मानसिक रूप में बताने से मिलती है, तो हम इसमें प्रयत्न नहीं करेंगे और हो सकता है कि ''नैतिक संघर्ष'' को बन्द ही कर दें। इस आयत से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ''नैतिक संघर्ष'' आवश्यक है।

जब कोई हर व्यक्ति के संघर्ष को समझकर भी इस बात ''परमेश्वर को करने दो'' की थियोलोजी पर ज़ोर दे तो इसमें कुछ बेमेलपन है। कुछ थियोलोजियन का मानना है कि इन दो अलग-अलग अवधारणाओं को एक किया जा सकता है, परन्तु इसके लिए ऐसे कारीगर की आवश्यकता है जिसका विज्ञापन एक बार इग्लैंड में एक बूढ़े लोहार की दुकान पर दिया गया था: ''यहां पर हर प्रकार के फैंसी मोड़ और घुमाव बनाए जाते हैं!''

याकूब यह पूछकर कि ''क्या ऐसा विश्वास कभी उद्धार कर सकता है?'' (याकूब 2:14) विश्वास से किए जाने वाले कामों की आवश्यकता की घोषणा कर रहा था। वह केवल किसी के किसी साथी को विश्वास दिखाने की बात नहीं कर रहा था बल्कि सचमुच में उद्धार दिलाने वाले विश्वास की बात कर रहा था। हम याकूब की घोषणा का इनकार कर सकते हैं। निश्चय ही परमेश्वर उद्धार और पवित्र किए जाने का साधन देता है परन्तु वह हमारे लिए सब कुछ नहीं करता है। पौलुस ने कुरिन्थियों को बताया था, ''सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता [जो कि *पवित्रीकरण* है] को सिद्ध करें'' (2 कुरिन्थियों 7:1)। परमेश्वर हमें आज्ञापालन के द्वारा पवित्र करने का काम करता है, न कि इसके बिना (फिलिप्पियों 2:12, 13)।

हमें परमेश्वर से हमारे द्वारा काम करने की उम्मीद करनी चाहिए जैसे उसने पौलुस के द्वारा किया, जिसने कहा, ''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। हम सचमुच में परमेश्वर के साथ ''सहकर्मी'' हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 3:9)। यह एक ज़बर्दस्त विचार है। हम चाहे कितनी भी ''छोटी सेवा'' करें हमें मालूम है कि हम परमेश्वर के साथ काम कर रहे हैं। मानवीय प्रयास आवश्यक है, परन्तु जब हम परमेश्वर के साथ काम करते हैं तो हम आनन्दित हो सकते हैं!

जो ''विश्राम'' इस्राएल को कनान में मिला वह उस विश्राम की *परछाई* ही था जो मसीही लोगों को मिलेगा। कुलुस्सियों 2:16, 17 ऐसी ही अवधारणा को ठहराता है कि केवल विशेष भोजन खाने या किसी सब्त को मनाने सहित पुरानी व्यवस्था की हर रीति, मसीह में पाई जाने वाली मूल वस्तुओं की छाया ही हैं। इस्राएल को मिलने वाली शांति में प्रतिज्ञा किए हुए देश में विश्राम शामिल था: अच्छी फसल और शत्रुओं के हमले से छूट, फसल न होना और सूखा उनके विश्वास न होने से हो सकता था। परन्तु वे बड़ी बड़ी आशिषें शारीरिक थीं और उन से सदा रहने वाली संतुष्टि नहीं मिलनी थी। मसीही व्यक्ति का विश्राम मन की शांति और परमेश्वर की

उपस्थिति में महिमायुक्त अनन्तकाल दिलाता है। यह सचमुच में सब्त को मानना है।

एक दिन लेट—आज्ञा न मानने का एक उदाहरण (4:11)

जब कालेब और यहोशू द्वारा लोगों को बताया कि वे तुरन्त जानकर देश पर कब्जा कर लें, तो उन्होंने देर कर दी और "रात भर रोते रहे" (गिनती 14:1)। लोगों को कालेब और यहोशू या मूसा और हारून पर विश्वास नहीं हुआ था। परन्तु जब मिलाप वाले तम्बू में "यहोवा का तेज" प्रकट हुआ (गिनती 14:10) और मण्डली को मूसा और हारून की प्रार्थनाओं के लिए यहोवा जवाब बताया गया तो उन्हें विश्वास की अपनी कमी पर अफ़सोस हुआ। तब उन्होंने आज्ञा मानकर देश पर कब्जा करने का निर्णय किया (गिनती 14:39, 40), परन्तु यह एक दिन बहुत देर के बाद था।[66] उन्होंने विद्रोह किया था और उन्हें इसके परिणाम भुगतने पड़ने थे, जिसका अर्थ जंगल में मृत्यु होना था। प्रभु की आज्ञा मानने का एक सही समय होता है और वह समय "आज" है (इब्रानियों 4:7)। परमेश्वर ने "यहां तक और इसके आगे नहीं" ठहराया है। मन फिराने और क्षमा की उसकी पेशकश से हो सकता है कि इस जीवन के पाप के परिणाम न मिटें। परमेश्वर ने चाहे इस्राएलियों को जिन्होंने पाप किया था क्षमा देना चुना था पर फिर भी वह जंगल में मर गए थे। हम भी इसी प्रकार से पहले परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार कर सकते हैं और अन्त में बचाए जा सकते हैं। परन्तु अनन्तकाल तक पहुंचने से पहले हमें अपने अस्थाई आज्ञा न मानने के कई प्रकार से दुख उठाने पड़ सकते हैं।

इस्राएल के आज्ञा न मानने का परिणाम उनका "गिरना" (*piptō*) हुआ जिसका अर्थ नकाम होना या "गिर जाना" है। रोमियों 11:22 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है जो अनुग्रह से गिरने की सम्भावना पर बाइबल की सबसे स्पष्ट बातों में से एक हैं। यदि कोई परमेश्वर की भलाई में बना रहने से इनकार करता है तो उसे "काट डाला" जाएगा। विश्वासत्याग (बेदीनी) का खतरा वास्तविक है और डॉक्ट्रिन की कोई बहस इस सच्चाई को बदल नहीं सकती है।

सामर्थी वचन (4:12, 13)

इसकी सामर्थ के कारण वचन को पुलपिटों से, कक्षाओं में और घरों में सुनाया और सिखाया जाना आवश्यक है। पुराने और नये दोनों नियमों से वचन को ज्ञान के बहते चश्मे के रूप में व्यावहारिक प्रासंगिकता के साथ पुलपिट से सामने लाया जाना चाहिए। कलीसिया के अगुओं का मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि वचन लगातार सिखाया जाए, क्योंकि वचन में मनुष्य के मन के गुप्त भेदों को प्रकट करने और उन्हें धार्मिकता की ओर मोड़ने की शक्ति है। बाइबल कलास की शिक्षा और घरों में अध्ययन, चाहे अच्छे हैं पर उनके आम तौर पर वह बल और शक्ति नहीं होती जो खुले में और साफ़ साफ़ सुनाए गए वचन में होती है।

वचन में "छेदने वाली" सामर्थ है। इसका अर्थ यह लिया जा सकता है कि जब कोई मनन करने के लिए वचन को अपने हृदय में रहने देता है तो यह प्राण को इसके पाप से निरुत्तर करता है। क्या हम ने ऐसा किया है? पिन्तेकुस्त के दिन लोगों के "हृदय छिद गए" थे (प्रेरितों 2:37) या वे पछतावे से भर गए थे। वचन ने उन्हें टुकड़े टुकड़े कर डाला था। वे मन फिराव और बपतिस्मा के लिए तैयार हो गए थे जिसकी पतरस ने इसके बाद आज्ञा दी (2:38)। यदि आप

कभी यहां तक नहीं पहुंचे हैं तो परमेश्वर के वचन से आप ''छिदे'' और अलग नहीं हुए हैं।

आयतें 12 और 13 के अनुसार आगे इस बात का सार मिलता है कि वचन क्या करता है और क्या कर सकता है: (1) यह परमेश्वर का वचन है। (2) यह जीवित है। (3) यह शक्तिशाली और सामर्थी है। (4) यह हर एक दो धारी तलवार से भी ''तीखा'' है। (5) यह भीतर तक चला जाता है। (6) यह ''प्राण और आत्मा को और गांठ को आर पार छेद'' कर नया बनाता है। (7) यह ''मन की भावनाओं और विचारों को सामने लाकर उन्हें प्रकट कर देता है।''[67] परमेश्वर का वचन हमें अपने आपको दर्पण में देखने से बेहतर दिखाता है (याकूब 1:25; 2 कुरिन्थियों 3:18)।

हमें परमेश्वर को लेखा देना है (4:13)

हमें अपने वाले न्याय का प्रचार क्यों करना चाहिए? क्योंकि ''जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के मामने सब वस्तुएं खुली और प्रकट हैं'' (आयत 13)। लेखक ने चाहे अपने पाठकों को कई बार आने वाले न्याय की बात याद दिलाई (6:1, 2; 9:27; 10:27)। परन्तु यह स्पष्ट है कि वह बाइबल की इस शिक्षा से पहले ही अच्छी तरह परिचित थे। सब मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने पेश होना है (2 कुरिन्थियों 5:10, 11)। उस सच्चाई के कारण जिसे पौलुस ने दिल से माना था, वह मसीह की आज्ञा मानने के लिए ''लोगों को समझाने'' के लिए विवश था।

अन्त में सब के लिए एक ही न्याय होगा (इब्रानियों 9:27)। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों द्वारा अलग किए गए दो या अधिक न्यायों जैसी कोई बात नहीं है, क्योंकि हम सब को उसके सामने पेश होना है जो हमें मुर्दों में से जिलाता है (यूहन्ना 5:28, 29)। प्राचीन उन्हें सौंपी गई भेड़ों का ''लेखा'' देंगे (इब्रानियों 13:17)। आज्ञा न मानने वाली आत्माओं के लिए न्याय में एक भयंकर निर्णय होगा, ''... हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है'' (मत्ती 25:41)। अनन्त नरक का दण्ड दिए जाने की सम्भावना के बिना न्याय का कोई अर्थ या उसमें कोई शक्ति नहीं है। हमें आम लोगों में इसके प्रसिद्ध न होने के भय के कारण हमें इस विषय से बचे न। जब लोग गुस्ताखी से नरक की बातें करते और इसके वास्तविक होने की परवाह नहीं करते तो इस विषय पर और भी बल देकर बात करना आवश्यक हो जाता है। न्याय के दिन वह प्रचारक जो कभी पूरे ज़ोर के साथ न्याय का प्रचार करता था, परन्तु अपने अन्तिम दिनों में इतना ''अनुग्रह से भर'' गया कि खोए हुओं को चेतावनी न दे सका, कितना दुखी होगा!

हमारी तरह परखा गया (4:14, 15)

जी. सी. ब्रीवर ने निम्न विवरण के द्वारा पृथ्वी पर यीशु के अनुभव की सीमा को समझाया। चटनूगा, टैनिसी में एक रविवार शाम प्रचार करते हुए उन्होंने उन सभी भावनाओं को जो हमारे सामने आती हैं हमोर प्रभु द्वारा सहे जाने की बात बताई। 1920 के दशक में प्रभु की कलीसिया की वह मण्डली एक भवन में इकट्ठा होती थी जिसका इस्तेमाल विभिन्न सार्वजनिक गतिविधियों के लिए किया जाता था। सरमन के बाद दरवाजे पर उनसे एक जवान मिला और कहने लगा कि वह नहीं मानता कि जो ब्रीवर ने प्रचार किया है वह सही है। उसने कहा, ''जिस मुश्किल

से मैं गुज़र रहा हूं यीशु उसमें से कभी नहीं गुज़रा।'' भाई ब्रीवर ने उस जवान को एक अकेले कमरे में बुलाया जहां उसने एक पत्नी की कहानी बताई जो अपने नवजात बच्चे को लेकर किसी दूसरे आदमी के साथ जाने के लिए उसे छोड़ गई थी। उसने माना कि वह उस आदमी को मार डालने और अपनी पत्नी और बच्चे को वापस लेने के लिए पूरे इरादे से उस शाम उन्हें ढूंढ़ रहा था। आदमी ने मायूस होकर कहा, ''यीशु की कभी शादी नहीं हुई थी, और उसने पत्नी और बच्चा नहीं खोया था!'' भाई ब्रीवर ने कहा कि एक पल के लिए वह पीछे की ओर मुड़े परन्तु वहां इकट्ठे होने वाले कुछ समूहों के लिए एक कोने में खड़े प्यानों में उसकी नज़र पड़ी। उसने कहा कि ''उस प्यानो को देखो। इसमें संगीत की वह भी धुनें नहीं बजी हैं जो संसार में सुनी जाती हैं, परन्तु इसमें सभी सुरों के ताल हैं जिन्हें बजाया जा सकता है। इसी प्रकार से यीशु ने कभी बिल्कुल आपके जैसे नहीं सहा परन्तु उसने एक व्यक्ति द्वारा जिससे वह अत्यधिक प्रेम करता था पकड़वाए जाने की बड़ी हानि का सामना किया। हां उसे पता है कि आप किस पीड़ा से गुज़र रहे हैं।''

यदि हमें लगता है कि हम मायूसी और वेदना से गुज़र रहे हैं, तो यीशु को देखें। उसका पूरा जीवन क्रूस पर उसके आने तक और उस अकेलेपन के चरम को महसूस करके यह पुकारने तक एक से एक दुख से भरा था, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया'' (मत्ती 27:46)। जी उठे प्रभु में विश्वास के साथ हमें कभी पूरी तरह से अकेले महसूस करने की आवश्यकता नहीं है जैसे वह क्रूस पर था। हम प्रार्थना के द्वारा ''हियाव'' (आयत 16) से मसीह में पिता तक पहुंच सकते हैं। क्या हमारी बड़ी से बड़ी आवश्यकताओं के लिए हमारा प्रभु सचमुच में कभी ''न'' कहता है? मुझे नहीं लगता, क्योंकि वह ''हां'' का प्रभु ही है! (देखें 2 कुरिन्थियों 1:19, 20।)

जब लगे कि सब कुछ गलत हो रहा है तो प्रार्थना में परमेश्वर की ओर आएं, क्योंकि परमेश्वर के किसी बच्चे के लिए अपने प्रेमी पिता पर निर्भर रहना छोड़कर इस ''व्यावहारिक'' उम्र में इससे बड़ा पाप नहीं हो सकता। हमारी आवश्यकता को इस पुराने सुन्दर गीत में दिखाया गया है:

> क्या तुम्हारा हाल है पुर दर्द?
> क्या तुम बोझ से दबे हो?
> यीशु है तुम्हारा हम दर्द,
> जा के उसको ख़बर दो।
> दोस्त जब छोड़ें और सतावें,
> बाप से तुम बयान करो?
> तब वो गोद में तुम को ले के
> खोवेगा सब दुखों को।[68]

सहानुभूति करने वाला प्रभु (4:15)

इस अध्याय के अन्तिम शब्दों में ज़बरदस्त प्रेरणा मिलती है। ''जो स्वर्गों से होकर गया है''

उसे हमारी चिंता की बात दिखाते हैं। यीशु ने कई अलग-अलग अवसरों पर सहानुभूति दिखाई। मत्ती 9:36 में उसे भीड़ पर तरस आया जो बिना चरवाहे के भेड़ों जैसी थी। मत्ती 14:14 दिखाता है कि पांच हज़ार की भीड़ (जिसमें स्त्रियां और बच्चों की गिनती नहीं है) जो उसके पीछे आ रहे थे और भूखे थे, पर उसे तरस आया। मत्ती 15:32-38 में उसने पांच हज़ार पुरुषों, के साथ स्त्रियों और बच्चों के लिए वही किया।

मत्ती 18:23-35 में यीशु ने करुणा की आवश्यकता को दिखाते हुए एक दृष्टांत दिया। मत्ती 20:30-34 में उसने यरीहो में दो अंधों को चंगा किया। मरकुस 1:40-45 में उसने एक कोढ़ी को चंगा किया। मरकुस 5:1-20 बताता है कि हमारे प्रभु ने दुष्ट आत्मा से ग्रस्त आदमी पर दया की थी। मरकुस 9:14-27 में उसे दुष्ट आत्मा से ग्रस्त लड़के पर "तरस" आया। लूका 7:11-17 में उसने नाईन नगर की निर्धन विधवा के इकलौते पुत्र को जिलाया। लूका 10:30-37 में धन्य सामरी की कहानी है जिसमें यीशु ने विशेष ढंग से करुणा की शिक्षा दी। अन्त में लूका 15:11-24 में यीशु ने गलती करने वाले अपने पुत्र और पिता की करुणा का उदाहरण देता फरीसियों वाली सोच पर डांट लगाई। यीशु का मन गरीबों, कंगालों, बीमारों, दबे कुचलों के लिए सहानुभूति और करुणा से भरा था। क्या हम इससे कम कर सकते हैं? निश्चय ही वह करुणा करने वालों पर करुणा करेगा और दया करने वालों पर दया दिखाएगा। वह हमारे पांव धोने और हमें अपनी गिरी हुई स्थिति से वापस लाने और हमारे उद्धार के आनन्द को वापस लौटाने की छोटी सी छोटी सेवा देने को तैयार रहता है। यह सब तभी होता है यदि हम सचमुच में पश्चात्तापी होकर वैसे ही करुणा दिखाएं जैसे उसने दिखाई।

करुणा से भरा हमारा उद्धारकर्त्ता (4:15)

हमें पहली सदी के लोगों की तरह ही करुणा से भरे उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। यूनानी भाषा बोलने वाले देशों में स्तोइकी फिलॉस्फी बहुत मज़बूत थी। स्तोइकी लोग परमेश्वर को मनुष्यजाति के लिए भावना रखने या लोगों की परवाह करने के अयोग्य मानते थे। परमेश्वर की उनकी अवधारणा को *apatheia* शब्द के द्वारा बताया जाता था, जिससे हमें उदासीन के लिए अंग्रेज़ी शब्द "apathetic" मिला है। परमेश्वर में विश्वास करने के लिए आने वालों को जीवन पर अपने पूरे दृष्टिकोण को बदलना आवश्यक था। बहुतों के लिए इस खबर में बहुत बड़ा बोझ उतार दिया होगा। "हमारा परमेश्वर परवाह करता है!" यह संसार उसकी परवाह का बहुतायत से प्रमाण देता है (रोमियों 1:19, 20)। वह सूर्य की धूप और वर्षा और बहुतायत से फसल और अपनी सृष्टि के सारे अनन्द देता है। हम पढ़ते हैं कि भले अनुयायी "पृथ्वी के वारिस होंगे" (मत्ती 5:5)। क्योंकि सच्चे लोग हर प्रकार की भलाई में परमेश्वर के हाथ को देख सकते हैं। उसकी सृष्टि स्वयं पुकार उठती है, "मुझे परवाह है!" वह कभी भी उदासीन परमेश्वर नहीं है।

मसीही लोग जीवन की समस्याओं और परेशानियों को एक अलग आत्मा से देख सकते हैं। हम इस संसार के आगे अनन्काल को देख सकते हैं और जान सकते हैं कि स्वर्ग में घर की महिमा के सामने हमारी परेशानियां हल्की और थोड़ी देर की हैं (2 कुरिन्थियों 4:16-18)। हम सुनहरी सूर्यास्त या हरे भरे बसंत को उस आनन्द के साथ देख सकते हैं जिसका गैर मसीही लोगों

को पता नहीं है। हम मसीह में अपने भरोसे के कारण संसार का बेहतर आनन्द ले सकते हैं।

उसके नाम में आना (4:16)

गृहयुद्ध की यह कहानी किसी बैंक कर्मचारी की है जिसका बेटा लड़ने के लिए दूर गया था। पिता को अपने बेटे और सेना की भलाई की इतनी चिंता थी कि वह घायल सेनानियों की देखभाल के लिए बहुत पैसा खर्च करने लगा। वह इस गतिविधि के लिए अपना इतना समय देता था कि उसे अपने उच्च अधिकारियों द्वारा धमकाया गया और नौकरी छोड़ देने को कहा। परन्तु एक दिन एक जवान उसके दफ़्तर में आया। वह कमज़ोर था और ज़ाहिर था कि युद्ध से लौटा सिपाही था परन्तु उसके घाव अभी तक पूरी तरह ठीक नहीं हुए थे। परन्त जवान ने गला हुआ पत्र निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला। यह पत्र उसने बैंक कर्मचारी को दे दिया, जिसने पढ़ा, ''प्रिय पिता जी: यह आदमी मेरा साथी है जो युद्ध में मेरे साथ घायल हो गया था। कृपया इसके साथ वैसा ही करें जैसा आप मेरे साथ करते। आपका बेटा, जॉन।'' बैंक कर्मचारी ने उस जवान देखभाल के लिए जो भी आवश्यक था वह जल्दी जल्दी उपलब्ध करवा दिया। यदि वह अपने नाम में आया होता तो उसे स्वीकार नहीं किया जाना था। परन्तु वह बैंक कर्मचारी के बेटे के नाम में आया था। हमारे लिए कितनी बड़ी आशीष है कि पिता के पास हमारा एक सहायक है जो उसे प्रिय है! अपने नये महायाजक मसीह के कारण हम जानते हैं कि वह हमारी विनतियों को सुनेगा!

परमेश्वर के निकट आना (4:16)

मसीही लोगों के रूप में हमें परमेश्वर के निकट आने पर पाबन्दी नहीं है। हम उससे बात कर सकते हैं, इसलिए अपने बीच हमें किसी मनुष्य की सेवा लेने की आवश्यकता नहीं है। हम में से हर कोई पवित्र और शाही याजकाई का भाग, परमेश्वर के सामने याजक है (1 पतरस 2:5, 9)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की नज़र में हम बहुमूल्य हैं। हर पवित्र जन को अपना काम करने के लिए ठहराया गया है। और उसे प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर के निकट आने का सुअवसर दिया गया है। प्रार्थना करते समय हम हर बार आनन्द से यह विचार कर सकते हैं, ''मैं अब आत्मा में परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने लोगों के लिए यीशु मसीह अपने उद्धारकर्त्ता के द्वारा उसके साथ प्रवेश कर रहा है!''

परमेश्वर के सिंहासन के पास आना (4:16)

परमेश्वर के दो सिंहासन नहीं हैं, जिसमें एक न्याय करने के लिए और एक दया करने के लिए। वही सिंहासन जो विद्रोह करने वालों के मन में डर पैदा करता है। विश्वास करने वालों को विश्वास और शांति देता है। परमेश्वर की संतान कह सकती है, ''हे हमारे पिता ...'' जो कि अनने आप में शांति देने वाला है। पापी को पता नहीं है कि क्या कहे और उसे परमेश्वर के निकट आने की हिम्मत नहीं हो सकती। हम उसे ''हिम्मत रख'' भी नहीं कहते! परन्तु परमेश्वर की संतान प्रेमी पिता के रूप में अति प्राचीन तक पहुंच सकते हैं। हम परमेश्वर के पुत्र के साथ प्रार्थना के समयों में मिल सकते हैं, जो दया से भरकर देखते हुए हमारे लिए विनती करने को बैठा है

(इब्रानियों 7:25)। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच हमारे अकेले मध्यस्थ का काम करते हुए "स्वर्ग में हर समय हमारा आदमी बनकर हमारी सहायता करता है" (देखें 1 तीमुथियुस 2:5)।

टिप्पणियां

[1]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 73, एन. 17. [2]फिलो ने कहा कि परमेश्वर "सदा के लिए विश्राम करना बन्द ... नहीं कर सकता" (*फिलो ऑन द चेरुबिम* 87–90)। नील आर. लाइटफुट ने माना कि "विश्राम" सम्भवतया मत्ती 11:28 की तरह वर्तमान की ही बात करता है। (नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडेः ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1976], 96.) [3]विलियम बार्कले, *द लैटर टू और हिब्रूज़,* 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1957), 31. [4]*द इंटरप्रेटर'स बाइबल* (नैशविल्लः अबिंग्डन प्रैस, 1955), 11:630–31 में एलेक्जेंडर सी. पुरडी, "द एपिस्टल टू द हिब्रूः इंट्रोडक्शन एंड एक्सेजेसिस।" [5]जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ हिब्रूज़,* 2रा संस्क. (सरसी, आरकैंसाः बाय द ऑथर, 1984), 51. [6]1 कुरिन्थियों 10:1–13 और रोमियों 15:4 दोनों ही इस कारण के लिए पुराने नियम के मूल्यवान टूल होने का संकेत देते हैं। [7]थामस हेविट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ः ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 86. [8]सारा संसार कहीं भी नहीं बदला था जब पौलुस ने संकेत दिया कि सुसमाचार सब के लिए उपलब्ध करवा दिया गया है (कुलुस्सियों 1:5, 6, 23)। [9]हस्तलिपि के एक अन्तर ने यहां पर NKJV के अनुवादकों को वाक्यांश "सुनने वालों के विश्वास के साथ मिला नहीं" लगााने के लिए उकसाया। [10]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू हिब्रूज़ः ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 112. प्रेरितों 19:1–6 भी देखें जहां "तुमने विश्वास करते समय" कहते हुए अप्पुलोस व अन्य चेलों के आरम्भिक परिवर्तन के बारे में पूछा था। उन्होंने पवित्र आत्मा के बारे में सुना ही नहीं था इसे कारण उसे तुरन्त पता चल गया कि उनका बपतिस्मा मान्य नहीं है, क्योंकि यह यूहन्ना के पवित्र पुराने पड़ चुके बपतिस्मे के आधार पर था। वह यह मान सकता था कि विश्वास करने का दावा करने वाले हर व्यक्ति को डुबकी भी दी गई होगी।

[11]वही। [12]ASV और NKJV में लगभग यही अनुवाद है। NIV में "वे मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेगे" है। [13]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबरले, मिजोरीः स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 54, एन. 4. [14]वही, 57, एन. 20. देखें इब्रानियों 9:26; मत्ती 13:35; 25:34; लूका 11:50; यूहन्ना 17:24; इफिसियों 1:4; 1 पतरस 1:20; प्रकाशितवाक्य 13:8; 17:8. [15]ऑर्थर डब्ल्यू. पिंक, *ऐन एक्पोज़िशन ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1954), 205. [16]*द इंटरप्रेटर'स बाइबल,* संपा. जॉर्ज ऑर्थर बटरिक (नैशविल्लः अबिंग्डन प्रैस, 1955), 11:631 में जे. हैरी कॉटन, "द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ः एक्सपोजिशन" से लिया गया। [17]ब्रूक फोस वेस्टकॉट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ः द ग्रीक टैक्सट विद नोट्स एंड ऐसेज़* (लंदनः मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 96. क्लेमेंट ऑफ़ रोम और फिलो से लिए गए उदाहरणों से पता चलता है कि यह उपयोग आम था। [18]परन्तु "आवश्यक" शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में नहीं मिलता है। [19]*मिदराश कोहेलेथ* 10:20.1. जंगल में विश्वास न होने के लिए सब लोगों के दोषी होने के विचार से रब्बियों को दिक्कत थी। वे एक राजा का दृष्टांत देते थे जिस क्रोध में शपथ खाई कि उसका पुत्र महल में दोबारा प्रवेश नहीं करेगा। क्रोध शांत हो जाने पर उस ने पुराने महल को गिरा कर एक नया महल बना दिया ताकि उसका पुत्र उसमें आ सके। (रीस, 59, एन. 27)। रूपकों से कुछ साबित नहीं होता; आम तौर वे केवल "कमज़ोर कड़ियां" होते हैं जो कि इब्रानियों की पुस्तक नहीं है। [20]गुथरी, 114.

[21]परन्तु कुछ लोगों का मानना है कि धर्मशास्त्र का अर्थ वास्तविक यीशु था क्योंकि वह चट्टान में था (1 कुरिन्थियों 10:4) और मूसा को "मसीह के कारण निन्दित होने" की कुछ समझ थी (इब्रानियों 11:26)। [22]वेस्टकॉट, 98. [23]फिलिप एजकुम्ब ह्यूजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 160–61, एन. 67; प्लुटार्क *मॉरल्स* 166. [24]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपस्टिल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटीः चेज़ एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्लेः गॉस्पल

एडवोकेट कं., 1975), 166. [25]3:1 को उद्धृत करते हुए रीस ने कहा कि "एक" यीशु मसीह है। (रीस, 61-62.) [26]अलबर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेंट: हिब्रूज़ टू ज्यूड* (लंदन: ब्लैकी एंड सन, 1884-85; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1985), 103. [27]ह्यूजस, 62, एन. 44. [28]आइज़क वाट्स, "ऐम आई ए सोलज़र ऑफ़ द क्रॉस?" *सॉन्गस ऑफ़ द चर्च*, संकलन व संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशर्स, 1977). [29]ऐलन, 52. [30]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 90.

[31]रीस, 63. [32]केनथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1947), 88. [33]ह्यूजस, 167. [34]*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन, एंड जी. सी. डी. हाउले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1986), 1513 में गेरल्ड एफ़. हाअथॉर्न, "हिब्रूज़।" [35]देखें यूहन्ना 1:1-3, 14; 1 यूहन्ना 1:1, 10; प्रकाशितवाक्य 19:13. कुछ लेखकों को "ईश्वरीय विचार" के रूप में लोगोस के फिलो के उपयोग में कई समनांतर शब्द मिलते हैं। यूहन्ना (1:1) के साथ साथ यहां पर λογοσ (लोगोस) का प्रयोग हुआ है, परन्तु इब्रानियों में इसका इस्तेमाल यीशु के बजाय परमेश्वर के "ईश्वरीय वचन" के रूप में हुआ है। (वेस्टकॉट,101.) [36]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी कॉन्फिडेंट: ऐन एक्सपोज़िटरी स्टॅडी ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स, 1982), 44. [37]गुथरी, 117. [38]कॉटन, 11:630. [39]हेविट, 90. वेस्टकॉट ने ऐसी ही टिप्पणी की है, "यह [वचन] हमारे सांसारिक ढांचे के हर तत्व में से अपना रास्ता निकाल लेता है" (वेस्टकॉट, 102)। [40]आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ एंड द एपिस्टल ऑफ़ जेम्स* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 144.

[41]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* (आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 90-91. [42]रे सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 60. [43]ब्राउन, 95. [44]जोसेफस *एन्टिक्विटीज* 3.6.4. [45]वेस्टकॉट, 106. [46]लाइटफुट, 100. [47]वेस्टकॉट, 107. [48]इसका अर्थ निर्बलता न होकर सामर्थ है। [49]कॉफमैन, 94. [50]ऐलन, 55-56.

[51]गेरल्ड एफ़. हाअथॉर्न ने सुझाव दिया है कि यीशु पाप करने में अक्षम था परन्तु हो सकता है कि उसे इस का पता न हो क्योंकि अपनी मानवीय स्थिति में रहते समय उस का ज्ञान सीमित था (मत्ती 13:32)। (हाअथॉर्न, 1513.) पवित्र शास्त्र केवल इतना बताता है कि उस ने पाप नहीं किया (2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:21, 22; देखें यूहन्ना 8:29, 46; 10:32; 1 यूहन्ना 3:6, 7)। [52]फिलो *ऑन ड्रीम्स* 2.230-32. [53]LXX में यह एक तकनीकी शब्द है "सेवा में परमेश्वर तक याजकीय पहुंच के लिए" (वेस्टकॉट, 108)। लैव्यव्यवस्था 21:17, 21; 22:3 में इसका इस्तेमाल इस ढंग से किया गया है, चाहे इसकी व्यापक प्रासंगकिता भी है। [54]वही। [55]वियर्सबे, 48. [56]लेंसकी ने यह कहते हुए आपत्ति की, "परन्तु हम अभी तक यह देखने की प्रतीक्षा करते हैं कि प्राण और आतमा अलग कैसे होते हैं" (लेंसकी, 144)। [57]जॉर्ज वेस्ली बुचनन, टू द *हिब्रूज़: ट्रांसलेशन, कमेंट एंड कंक्लूज़ंस,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे, 1972), 75. [58]रीस, 64, एन. 52. [59]आश्चर्य की बात है कि कुछ लोग (जैसे पिंक, 210-11) किस प्रकार से आज भी "मसीही सब्बत" के हमारे ऊपर लागू होने की बात का बचाव करना चाहते हैं जबकि मसीही लोगों के आत्मिक विश्राम और प्रतिज्ञा के अनन्त घर में यह पहले ही पूरा हो चुका है। [60]क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यार्क: डबलडे, 2001), 279.

[61]कॉटन, 632. [62]ब्रूस, 74-75, एन. 20. इन मामलों पर ब्रूस ने दूसरी शताब्दी के बरनबास के विचार से काफ़ी उद्धरण लिए। [63]बार्कले, 33 से लिया गया। [64]स्टेडमैन, 57. [65]ब्राउन, 90. [66]"बहुत देर बाद दिन" का विचार पिंक, 214 द्वारा सुझाया गया। [67]पिंक, 217. छठा कथन आयत के पिंक के विचार को सही मान लेता है—जिसका अर्थ है कि नव जन्म का विचार शाब्दिक "प्राण और आत्मा को अलग करना" में शामिल है। [68]जोसेफ एम. स्क्रिवन, "वट ए फ्रेंड वी हैव इन जीज़स," *सॉन्गस ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* संकलन व संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।